ओ३म्

५३५१(७)
Maithilisharan

आर्य प्रकाशन-विभाग का द्वितीय पुष्प

ईसाई मत और उसकी काली कर

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक ... 5250
दयानन्द महिला महा...

लेखक :

सूर्यबली पाण्डेय

प्रकाशक :

मंत्री आर्य समाज

जौनपुर [मूल्य २०-न०पै०

प्रथमावृत्ति-२०००]

मुद्रक—मौर्य प्रिंटिंग प्रेस, जौनपुर।

ईसाई मत और उसकी काली करतूतें

इस समय विश्व में बड़े जोरों का ढंका पीटा जाता है कि विश्व का अधिकांश भाग ईसाई मत से भरा हुआ है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ईसाइयत का प्रचार करने के लिये नयी और पुरानी दुनियाँ की मिशनरियों ने जितना जी तोड़ परिश्रम किया है और आज भी कर रहे हैं तथा जितना धन पानी की तरह बहाया है और आज भी दूने उत्साह के साथ बहा रहे हैं, यही नहीं इस कार्य के लिये गोरे शरीर वालों ने जितनी काली करतूतें की हैं और आज भी कर रहे हैं उनसे तो सारे संसार को ईसाई बन जाना चाहिये था। पर ईसाइयत के अन्दर उसके निजी कुछ ऐसे दोष हैं जिनके कारण सब कुछ होने पर भी उसको उतनी सफलता नहीं प्राप्त हुई जितनी होनी चाहिये थी। वैदिक धर्म के अन्दर न प्रचार के साधन हैं न प्रचार की धुन तो भी अपनी व्यक्तिगत अच्छाइयों के कारण अपनी शाखा बौद्ध और जैन धर्म को मिलाकर आज भी विश्व का सबसे बड़ा धर्म कहलाने का अधिकारी है। किन्तु इतना तो निर्विवाद सत्य है कि अपनी निष्क्रियता तथा औरों की सक्रियता से हम अनुदिन क्षीण होते जा रहे हैं और ईसाइयत तथा दूसरे मत क्रमशः बढ़ते जा रहे हैं।

ईसाइयत का प्रादुर्भाव

ईसाइयत के साथ अज्ञान और अन्धकार का सृजन करने वाला उसका प्रवर्तक ईशू या ईसामसीह कहा जाता है। यद्यपि उसने बिगड़े हुये तथा भ्रष्ट मूसाई या यहूदी मत का परिष्कार ही किया तथापि अपनी करामातों को दिखाकर अपने शिष्यों तथा मूढ़ जनता को प्रभावित करने वाला ईसा न अपनी आत्मा को प्रकाश में ला सका और न दूसरों को ही प्रकाश प्रदान कर सका। कारण स्पष्ट है। ईसा का जन्म स्वयं एक करामात का परिणाम बतलाया जाता है और वह स्वयं कलंकी है तब उसके द्वारा दूसरों का कालुष्य कब धुल सकता है? फिर भी वह विश्व को पाप से छुड़ाने आया था, यह कैसी विडम्बना है!

ईसा का जन्म फिलिस्तीन में येरुशलम के पास वेथलीहेम ग्राम में इसराइल वंश के अन्दर हुआ था। इतिहासकारों ने उसके पिता का नाम यूसुफ और माता का नाम मरियम बताया है। किन्तु इंजील की कहानियाँ उसकी माता का नाम मरियम तो बताती हैं परन्तु उसके साथ शब्द कुमारी विशेषण जोड़कर उसे कुमारी मरियम कहती हैं और पिता के स्थान पर यूसुफ को न बतला उसे खुदा का बेटा कहती हैं। बात स्पष्ट यह है कि कुमारी मरियम की सगाई यूसुफ से हो चुकी थी। पर पति दर्शन से पूर्व ही वह गर्भवती हो गई। भला समाज इस काण्ड को कभी भी स्वीकार नहीं कर सकता। किन्तु फिलिस्तीन में उस समय इतनी मूर्खता थी कि सर्व साधारण को कुछ भी कह के बहकाया जा सकता था। यूसुफ ने मरियम की बदनामी न कर उसे चुपके से त्याग देना चाहा। पर कहा जाता है कि देवदूत ने उसे स्वप्न दिया कि मरियम के गर्भ में खुदा का पुत्र है। तू उसकी रक्षा कर और उसके पैदा होने पर उसका नाम ईशु रख फिर क्या था! समय पर ईसा पैदा हुआ। मरियम पत्नी यूसुफ की हुई और ईसा पुत्र खुदा का बन बैठा। इसके अतिरिक्त होता ही क्या! भगवान् ही जाने किसका पुत्र था। जब पिता का पता ही नहीं तो भगवान के अतिरिक्त किसका पुत्र कहा जाता? अस्तु बालक ईसा बारह वर्ष तक येरुशलम तथा उसके समीप देखा जाता है। उसके पश्चात् १८ वर्ष तक का उसका इतिहास गुप्त और लुप्त है। बाइबिल केवल इतना बतलाती है कि इस अवधि में वह अपने पिता यूसुफ बढ़ई के यहाँ रहकर बढ़ईगीरी सीखता रहा। यदि यह बात सत्य है तो साथ ही यह भी सत्य है कि उसकी शिक्षा-दीक्षा कुछ भी न हो सकी। वह निरामूढ़ बना रह गया। किन्तु बात ऐसी नहीं है। इस अठारह वर्ष की अवधि को उसने भारतवर्ष में बिताया था और भारतीय हिन्दू-बौद्ध और जैन सन्तों की सेवा में रहकर काशी, राजगृह और जगन्नाथ पुरी में ज्ञानार्जन किया था। पुनः फारस के रास्ते होता हुआ जूडिया प्रान्त को चला गया। ईसा के अन्ध भक्त शिष्यों! तुम भारत को अपना शिष्य बनाना चाहते हो पर तुम्हारे मत का जन्मदाता और तुम्हारा आदि गुरु ईसा इसी भारत का शिष्य रह चुका है।

भारत से वापस जाने पर ईसा ने अपने विचारों का प्रचार करना प्रारम्भ किया। "अपने प्रचार के प्रारम्भिक काल में उसने अपने को इसराइल जाति को आबाद कराने वाला (Political Redeemer) घोषित किया। किन्तु जब पकड़े जाने के भय का भूत सिर पर सवार हुआ तब उसने अपने आपको मानव जाति का आध्यात्मिक मुक्ति-दाता कहना प्रारम्भ कर दिया और अपना शिष्य बनाना प्रारम्भ कर दिया।" यही ईसाइयत का प्रारम्भ था। उसने अपने विचारों को प्रदान कर अनेक शिष्य बनाये। पर उसमें बारह प्रमुख थे। उनके नाम थे साइमन, ऐण्ड्रज, जेम्स, जोन्ह, फिलिप, मैथू, मत्ती, थामस और जूडोस आदि। राजनैतिक और धार्मिक दोनों दृष्टियों से क्रमशः राजा और पुरोहित दोनों उसके शत्रु बन गये। इस परिस्थिति में बेचारे ईसा को भागने और अपने को छिपने के अतिरिक्त और कोई चारा न रह गया। पर उसके प्यारे शिष्य जूडास ने केवल तीस रुपया की लालच में ईसा को पकड़ कर पुरोहितों के हवाले कर दिया। यहूदी पुरोहितों ने उसे न्यायाधीश "कैफियास" के समक्ष उपस्थित किया जहाँ उस पर राजद्रोह तथा प्रजा के बहकाने का आरोप लगाकर मुकदमा चलाया गया और कानून के अनुसार शूली की सजा दी गई। फिलिस्तीन में उस समय शूली देने का ढंग यह था कि अपराधी को लकड़ी के एक शिकञ्जा (जिसे सलीब कहा जाता था) पर जकड़ कर खड़ा किया जाता था और फिर हाथ पाँव में कीलें ठोंक दी जाती थीं। जब सिसकते-सिसकते उसका प्राणान्त हो जाता तब वह शिकञ्जे से उतारा जाता और उसके पैर तोड़ दिये जाते तथा शव सरकारी कर्मचारियों को सरकारी कब्रिस्तान में दफन करने के लिये दे दिया जाता था। इसी रीति से ईसा को भी शूली होनी चाहिये थी। पर येरुशलम का गवर्नर ईसा को शूली पर चढ़ाने के पक्ष में न था। इसी कारण उसके षड्यंत्र से ईसा शूली पर से मूर्छितावस्था में ही उतार लिया गया और उसके पैर भी नहीं तोड़े गये। उसका शव भी राज कर्मचारियों को न देकर एक विशेष स्थान पर रखा गया जहाँ जोसेफ तथा निकोडेस नाम के शिष्यों ने परीक्षण करके उसका उपचार किया और वह अच्छा होकर अपने शिष्यों के साथ गैलली नामक स्थान पर

चला गया।

क्या ईसा मरने के तीसरे दिन जी उठा ?

ईसाई पादरी यह बखान करते हुए अघाते नहीं कि ईसा शूली पर चढ़ने के पश्चात् तीसरे दिन जी उठा। जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि गवर्नर के षड्यन्त्र से वह मूर्च्छित अवस्था में समय से पूर्व ही सिकिर्जे के ऊपर से उतार लिया गया था। पैर भी नहीं तोड़े गये थे। यही नहीं बल्कि शरीर का परीक्षण करने वाले निकोडस ने जोसेफ से कहा था—"जितनी निश्चित् जीवन और प्रकृति सम्बन्धी मेरी विद्या है उतनी ही निश्चित् ईसा मसीह के बचा लेने की सम्भावना है।" स्पष्ट है कि विशिष्ट उपचारों से अधमरे ईसा के प्राणों की रक्षा की गई। अतः यह कहना कि ईसा मरने के तीसरे दिन जी उठा, सरासर गलत और सृष्टि नियम के प्रतिकूल है। यदि वह मरने के पश्चात् अपनी करामात से पुनः जी सकता था तो जब ७० वर्ष की अवस्था में इतिहासकार यंग हसबैण्ड के कथनानसार *कश्मीर में मरा तब उसकी करामात कहाँ चली गई थी ? क्यों आज तक* कश्मीर की भूमि पर पड़ा कब्र में सो रहा है ! क्या किसी पादरी के पास इसका उत्तर है ?

क्या ईसा आस्तिक और निष्ठावान था ?

हम आस्तिक उसे कहते हैं जो ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखता हो और अपने ऊपर घटित प्रत्येक घटना को उसी की इच्छा का परिणाम समझता हो। निष्ठावान भी हम उसे कहते हैं जो अपने कर्तव्य-पथ पर निरन्तर अग्रसर होता जाय और मार्ग की बाधाओं को प्रसन्नता से सहते हुए हाथ से अपने धैर्य को कभी जाने न दे। हमने सामान्य जनों को भी मृत्यु का प्रसन्नता पूर्वक आलिंगन करते हुए देखा है और स्नान, ध्यान तथा गायत्री मंत्र का पाठ करके फाँसी की रस्सी को अपने गले में डाल लेना तो भारतीय वीरों के लिये सामान्य बात रही है। पर ईसा में हमें वह बात नहीं मिलती वह शूली पर चढ़ने के पूर्व सारी रात जागता रहा और बेचैनी के साथ अपने शिष्यों को जगाता रहा। यही नहीं, उसने शूली पर चढ़ते हुए

रोकर कहा—"एली, एली लामा सब चतानी" अर्थात् हे मेरे प्रभु ! तुमने क्यों मुझे बिसार दिया ? क्या सच्चा आस्तिक अपने सिद्धान्त पर आत्म बलि देते हुए कभी भी ऐसे शब्द का उच्चारण कर सकता है ? वह तो उस ठोकी जाने वाली कील में अपने प्रभु का दर्शन करता और उसकी इच्छा पर अपने जीवन को उत्सर्ग करते हुए फूला न समाता। अतः सिद्ध है कि ईसा न आस्तिक था और न महात्मा। यही नहीं अपितु उसका जीवन स्तर सामान्य जनों से अधिक ऊँचा न था। ऐसी स्थिति में यह कहना कि वह सबके पापों को लेकर शूली पर चढ़ गया, कोरी मूढ़ता है।

ईसाई धर्म और उसके सिद्धान्त

ऊपर जिस ईसामसीह का किंचित् परिचय उपस्थित किया गया है, उसके द्वारा जिस मत का प्रवर्तन किया गया वह ईसाई मत कहलाया। जब प्रवर्तक क जीवन स्वयं केवल चमत्कारों का पुञ्ज है तब उसके द्वारा चलाया हुआ पंथ दिव्य कैसे कहा जा सकता है ? यही कारण है कि ईसाई धर्म का कोई दार्शनिक आधार नहीं है। सारी बाइबिल पढ़ जाइये और सारी इञ्जीलों को उलट जाइये बस केवल चमत्कार ही चमत्कार देखने को मिलेगा। बाइबिल के अन्दर कोई भी धार्मिक सिद्धान्त ऐसा नहीं जो तर्क की कसौटी पर खरा उतर सके। यही तो कारण है कि मिशनरी किसी शिक्षित के सामने खड़ा होकर ईसाइयत की विशेषता बतलाने में असमर्थ है। वह अपना प्रचार अपढ़, मूर्खों और जंगलियों में ही सरलता से कर सकता है क्योंकि बेचारे बनवासी जब कुछ जानते ही नहीं तब उनके सामने जो भी कहा जाय सभी ठीक है। हम इस स्थल पर ईसाई धर्म के कतिपय सिद्धान्तों को उपस्थित करते हैं। पाठक स्वयं उनकी सच्चाई का निर्णय करें।

१—'संसार के सब नर-नारी जन्मतः पापी हैं, यदि वे अपने पापों से मुक्त होना चाहें तो एकमात्र ईसा की शरण में आयें और उस पर विश्वास करें। ईसा पर जो विश्वास लायेगा वह पापों से मुक्त होगा और वह स्वर्ग में जाने का अधिकारी होगा। ईसा ईश्वर का पुत्र है। वह हमारे पापों को लेकर सूली पर चढ़ा।"

समीक्षा—जब सब नर-नारी जन्मत: पापी हैं तब ईसा पापी होने से कैसे बच सकता है क्योंकि उसने भी आखिर जन्म ही तो लिया था ? अत: ईसा स्वयं पापी ठहरता है। विश्वास लाना भी खिलवाड़ है। ईसाइयत में तर्क के लिये कोई स्थान नहीं। तर्क-हीन विश्वास तो अन्धविश्वास कहलाता है और अन्धविश्वास सदैव गर्त में गिराता है। फिर वह स्वर्ग का कारण कैसे बन सकता है ? संसार के जितने प्राणी हैं सब ईश्वर के पुत्र हैं। अकेले ईसा ही ईश्वर पुत्र नहीं कहा जा सकता। हाँ, यह और बात है कि ईसा जिस प्रकार से उत्पन्न हुआ था उस प्रकार से सभी पुत्र न उत्पन्न हुए हैं और न होना चाहते हैं। ईसा सबके पापों को लेकर सूली पर चढ़ गया तब अब पापी कौन बचा, और जब पापी कोई बचा ही नहीं तब पापों से मुक्त होने की कल्पना ही भ्रामक है।

२—"मैंने खुदा को रूबरू देखा" (पैदाइश ३२-३०)

३—"खुदावन्द का मूसा से रूबरू हमकलाम हुआ" (खुरुज ३३-११)

४—"खुदावन्द उस शहर और बुर्ज को जिसे आदम बनाते थे देखते हुए उतरा" (पैदाइश ११-५)

५—मैं अब उतर के देखूँगा कि उन्होंने सरासर उस चिल्लाने के मुताबिक जो मुझ तक पहुँचा, किया है या नहीं ? अगर नहीं तो मैं दरयाफ्त करूँगा" (पैदाइश १८-२०-२१)

समीक्षा—रूबरू (प्रत्यक्ष) तो वह दिखाई पड़ता है जो शरीरधारी हो। शरीरधारी को जन्म लेना और मरना पड़ता है। जब ऐसी बात है तब वह ईश्वर कैसा ! इस प्रकार का ईश्वर तो अल्पज्ञ और एक स्थान पर रहनेवाला होगा तभी तो उसके देखने और दरयाफ्त करने की आवश्यकता पड़ी। ईसाइयों का ऐसा अल्पज्ञ और एकदेशीय भगवान विश्व का क्या कल्याण करेगा ?

६—बाइबिल की कथा है कि "हजरत आदम ने पाप किया इस कारण स्वर्ग से निकाले गये। उनका पाप उनकी सन्तानों में भी आया अत: निष्पाप ईसा बिना बाप के पैदा हुए।" खूब कहा, बिना रज औ

वीर्य के सन्तान उत्पन्न होना सम्भव नहीं। जब पिता ही नहीं तब वीर्य आया कहाँ से ? यदि कहो खुदा का वीर्य था तब तो वह भी शरीरधारी हुआ और शरीरधारी होने से वह भी किसी पिता का ही पुत्र ठहरेगा। पिता का पुत्र होने से स्वयं खुदा भी उसी न्याय से निष्पाप नहीं रह सकता। जब खुदा ही निष्पाप नहीं तो उसका पुत्र ईसा निष्पाप कैसे कहा जा सकता है ? यदि बिना बाप के होने से हम उसे निष्पाप मान भी लें तब उसकी माता मरियम भी तो किसी पिता की ही पुत्री और आदम हौवा की सन्तान था। तब क्रमागत पाप से वह भी न बच सकी होगी। फिर उसी की सन्तान ईसा निष्पाप कैसे कहा जायगा ? जब ईसा स्वयं निष्पाप नहीं तब वह हमें पापमुक्त कैसे कर सकेगा ? पर इन तर्कों को भोले बनवासी क्या जानें ? इसी कारण ईसा के चेले उन्हें अपनी भेड़ों में लेने में समर्थ हो जाते हैं।

"ईसाइयत की नैतिकता"

१—उत्पत्ति की पुस्तक अध्याय १९ आयत ३० से ३७ तक में लिखा है—लूत नबी ने शराब पीकर अपनी दो जवान बेटियों से सम्भोग किया और दोनों से दो पुत्र पैदा किया।

२—उत्पत्ति की पुस्तक अ० २० आयत १२ और अ० १२ आयत १३ से १९ तक इब्राहीम नबी के सम्बन्ध में लिखा है कि उसने अपनी बहिन से विवाह किया।

३—कुरेन्थोन १ अ० ७ आयत ३६-३७ से प्रकट है कि "यदि कोई समझे कि मैं अपनी कन्या से विवाह करके शुभ काम करता हूँ और जो वह सयानी होवे तो वह जो चाहता है सो करे। ऐसा करना कोई पाप नहीं।"

४—यम० यल० की पुस्तक २ अ० १३ आयत ११ से १४ तक से प्रकट है कि दाऊद नबी के पुत्र ने अपनी बहन से उस समय अनुचित सम्बन्ध किया जब वह रोटी लेकर उसे खिलाने गई थी।

५—उसी यम० यल० पुस्तक २ अ० १६ आयत २२ में लिखा है कि

दाऊद नवी के पुत्र अबी सुलूस ने अपने बाप की स्त्री अर्थात् अपनी माता से अनुचित सम्बन्ध किया।

६—उत्पत्ति की पुस्तक अ० ३७ आयत १२ से ३४ तक में स्त्री तिमिर का अपने ससुर यहूदा से अनुचित सम्बन्ध करने का विस्तृत वर्णन है।

७—उत्पत्ति की पुस्तक अ० १६ आयत २ में लिखा है कि नवी लूत के गाँव में सुदूम और उमूरा नाम के खुदा के २ फरिस्ते आये। लोग उनकी ओर दौड़े। वे भाग कर लूत के घर में घुस गये। लोगों ने घर घेर लिया। पूछने पर बतलाया कि वे दोनों सुन्दर हैं हम उनसे प्रेम करेंगे। लूत नवी ने कहा—ऐसा न करो। यदि तुम लोग यही चाहते हो तो हमारे घर में हमारी दो लड़कियाँ हैं। उनसे जो चाहे जो कुछ करे।

८—निकास की पुस्तक अ० ३२ आयत २६ से ३१ तक बतलाती कि हजरत मूसा पैगम्बर ने खुदा के हुक्म से व्यभिचार कराये, कतलेआम कराया, निर्दोष बच्चों को मरवाया, क्वारी बच्चियों से विषयभोग किया, और असत्य बोले।

उपर्युक्त कथाओं पर कुछ भी टिप्पणी न कर अब जरा स्वयं हजरत ईसा मसीह के भी जीवन की किंचित् परख कर लेना अप्रासंगिक न होगा

१—मित्ती की इंजील अ० ११ आयत १६ और मरकस की इंजील अ० १४ आयत २५ से स्पष्ट प्रकट है कि ईसा शराब पिया करते थे। यही नहीं बल्कि यहुन्ना की इंजील अ० २ आयत १११ से प्रकट है कि वे औरों को भी शराब पिलाया करते थे।

२—यहुन्ना की इंजील अ० ११ आयत ५ बतलाती है कि हजरत ईसा एक चरित्र भ्रष्ट स्त्री से प्रेम करते थे। उसने हजरत के शरीर में इत्र लगाया। इसी प्रकार के अन्य अनेक कथानक इंजीलों में भरे पड़े हैं जिनका संकलन करना स्थानाभाव से ही नहीं अपितु अपनी शिष्टता को स्मरण कर सम्भव नहीं है। पर इतना तो हम अपने ईसाई मित्रों तथा उनके धर्म गुरुओं से अवश्य जानना चाहेंगे कि क्या यही उनके धर्म की शालीनता है? क्या इसी आदर्श नैतिकता के बल पर आप धर्म प्राण भारत की ऋषि सन्तानों

में अपनी धार्मिक दीक्षा देकर उन्हें निष्पाप बनाने की धुन में मस्त हैं ? मैं समझता हूँ आपके नबी पैगम्बरों और स्वयं खुदा के एकलौते बेटे ईसा ने जैसे-जैसे कुकृत्य किये हैं वैसा कृत्य करने में तो भारत का अधम से अधम मानव भी लज्जा के कारण भूमि में गड़ जायगा और कहीं उससे वैसा कृत्य हो ही जाय तो वह खुदा के लिये विष खाकर मर जाना ही अच्छा समझेगा। पर वाह रे ईसाई मिशनरी ! तुम इंजील की इन्हीं पाप पूर्ण आख्यानों को सुनाकर हम भारतीयों को निष्पाप बनाने चले हो ? बधाई है तुम्हारे साहस को।

क्या ईसा संसार को शान्ति का सन्देश देता है ?

प्रायः लोगों में यह भ्रम घर कर गया है कि ईसा मसीह शान्ति का अग्रदूत था। वह महात्मा बुद्ध और गान्धी से भी बढ़कर अहिंसक था। ईसा के शिष्यों द्वारा लिखित इंजीलों में इस प्रकार के अनेक आख्यान आते हैं जिन्हें पढ़कर भ्रम में पड़ना स्वाभाविक है। मत्ती की पुस्तक अ० ५ आयत ३९ में लिखा है। "जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तू दूसरा भी गाल उसकी तरफ कर दे।" कितना सुन्दर सिद्धान्त है ! ईसा के इस सन्देश को सुनकर उन पर रीझ जाना आश्चर्य की बात नहीं है। पर वास्तव में यह उसकी फँसने वाली जाल के अति रिक्त और कुछ नहीं है। यदि ईसा को निकट से आप देखना चाहें तो लूका की पुस्तक अ० १२ आयत ५१ पढ़ें। वहाँ आप ईसा को कहते हुए पायेंगे—"क्या तुम सोचते हो कि मैं पृथ्वी पर मेल कराने आया हूँ ? मैं तुम से सत्य कहता हूँ कि मेल नहीं, बल्कि जुदाई (लड़ाई) कराने आया हूँ"। पुनः इसी पुस्तक के इसी अध्याय की आयत ५३ में ईसा कहता है—"उस दिन बाप बेटे से दुश्मनी करेगा और बेटा बाप से। माँ बेटी से और बेटी माँ से। सास बहू से और बहू सास से।" पाठक सोचें। जिस ईसा को शान्ति का अग्रदूत बतलाने में और उसके शान्ति के तराने गाने में ईसाई मिशनरी जरा भी नहीं थकते उसी को भक्त लूका किस प्रकार संघर्ष प्रिय, लड़ाकू और पृथकतावादी सिद्ध कर रहा है। स्मरण रहे, लूका राम कृष्ण और शिव का भक्त नहीं,

मसीह का ही शिष्य है। इतना ही नहीं, वही लूका ईसा को लोगों के लिये तलवार खरीदने की प्रेरणा देता हुआ भी उपस्थित करता है। ईसा ने लोगों से कहा—जिनके पास तलस र नहीं है वे अपने कपड़े बेच कर तलवार खरीदें।" लूका की पुस्तक अ० २२ आयत ३६। ईसा की शान्ति प्रियता का राग अलापने वाले पादरी और उनसे प्रभावित दूसरे महानुभाव क्या अब भी ईसा को शान्ति स्थापन करने वाला ही कहेंगे? तलवार से भी शान्ति स्थापित होती है पर उसका कर्त्ता शासक होता है और वह शान्ति भी केवल ऊपरी शान्ति होती है। महात्माओं के द्वारा स्थापित शान्ति तो चिरस्थायी होती है और उसका प्रभाव जन साधारण की आत्माओं पर होता है। महात्मा बुद्ध, गान्धी और दयानन्द की शान्ति इसी कोटि की शान्ति थी। पर क्या ईसा भी उसी कोटि में गिना जा सकता है? भला जो शरीर ढकने के कपड़ों को बिकवा कर तलवार खरीदवाना चाहता है वह कितना उच्छृंखल, उग्र, लड़ाकू तथा साम्राज्यवादी हो सकता है? इसका उत्तर पदे पदे ईसाइयत के कारनामों से मिल रहा है। यही कारण है कि ईसाई जिस भी देश में प्रविष्ट हुए, एक हाथ में सलीब या बाइबिल दूसरे हाथ में तलवार लेकर प्रविष्ट हुए। उन्होंने अपनी तलवार को मदमस्ती के साथ इतना खुलकर प्रयोग किया कि उसे देखकर मानवता सिहर उठी। पाठकों की जानकारी के लिये गोरे पादरियों की कुछ काली करतूतों का उल्लेख कर देना अप्रासंगिक न होगा।

सारी ईसाइयत दो बड़े भागों में बँटी हुई है। १—रोमन कैथोलिक तथा २—प्रोटेस्टेंट। अन्यों को कौन कहे, इन्हीं दोनों ने एक दूसरे के प्रति जो अत्याचार किये हैं उसका स्मरण कर क्रूर हृदय भी सिहर उठता है। जब आपस में ही एक दूसरे के प्रति जरा भी सहिष्णुता नहीं रही तब दूसरे धर्मावलम्बियों पर ईसाई भला क्या सुख और शान्ति की वर्षा करेंगे? ईसाइयत का सही चित्रण इटली, फ्रांस, स्पेन, जर्मनी, ब्रिटेन, अफ्रीका आदि देशों के इतिहास में देखने को मिलता है। जहाँ इसने राज्य-सत्ता का सहारा पाकर विधर्मियों पर हृदय विदारक अत्याचार किये। विरोधियों के

स्त्री बच्चों तक को इसने भूखे शेरों के सामने धकेलने में लेशमात्र भी संकोच नहीं किया और उनके चीत्कार पर यह कहकहा लगा कर हँसती रही रोम के पुराने खंडहरात् आज भी इस पिशाचिनी के कुकर्मों की साक्षी दे रहे हैं। कितने असंख्य नरनारियों को जीते जी इसने अग्नि की भेंट चढ़ाया, कितनों को घोड़ों की पूँछ में बँधवा कर इसने तड़फा तड़फा कर मारा, तथा कितनों को जहर के प्याले पीने के लिये इसने विवश किया इसके स्मरण मात्र से रोमांच हो उठता है।" विदेशों में हुए अत्याचारों का उल्लेख कर हम इस निबन्ध की काया विस्तृत न कर अब आप बीती घटनाओं का ही उल्लेख करना उचित समझते हैं।

भारत में ईसाइयत का चरण २२ मई १४९८ ई० में आया और १५०६ ई० में उन्होंने गोवा पर अधिकार कर लिया। अधिकार की मदमस्ती में आकर ईसाइयों ने गोवा वासियों पर कितनी अमानुषिकता और क्रूरता की? इसके लिये पाठक उनके द्वारा दिये गये समय-समय के आदेशपत्रों को देखें और सोचें कि ईसाइयत और उसके पादरी किस प्रकार शान्ति का सन्देश देते हैं। गोवा के चीफ जस्टिस श्री नोरोंच जी द्वारा लिखित "गोमान्त के हिन्दू और पूर्तगीज रिपब्लिक" नामक पुस्तक इस सम्बन्ध में सुन्दर प्रकाश डालती है।

१—३० जून १५४१ का गोवा सरकार का आध्यादेश—"इतने समय तक शैतान के अधीन यह भारत भूमि रही। वह अब आकाश के पिता की रोशनी में आ गई है। इसलिये हे ईसाइयों! अब तुम हिन्दुओं के मन्दिर तोड़ो और मूर्तियों का नाश करो।" इतनाहीं नहीं, हिन्दुओं से विशेष कर लेने तथा ईसाई बन जाने पर कर से मुक्ति का विधान बना। यदि कोई पुत्र ईसाई बन जाय तो उसकी समस्त पैतृक सम्पत्ति उसको मिलने का विधान बनाया गया।

२—८ मार्च १५४६ का फरमान—"गोवा प्रदेश में जो मूर्तियाँ हैं उनका नाश करो। हिन्दुओं के मन्दिर तोड़ दो, हिन्दुओं के उत्सव बन्द करो, ब्राह्मणों को देश से बाहर निकाल दो, जो मूर्ति की पूजा करे उसे बड़े से बड़ा कठोर दण्ड दो। राज्य के किसी भी अधिकार के पद पर हिन्दू को न रहने दो। .... - .... जिस तरह से हो सके उस तरह से यत्न करके

हिन्दू धर्म का उच्छेद करो।"

३—सन् १५४८ में गोवा के अन्दर प्रेजुआवन्द अलबुकर्क ने हिन्दू धर्म के हजारों धर्म ग्रन्थों को जलाकर भस्म कर डाला।

४—**२५ मार्च १५५९ का सरकारी अध्यादेश**—"हिन्दुओं के मन्दिर तोड़े जायँ, सब मूर्तियाँ नष्ट कर दी जायँ, भविष्य में हिन्दू मूर्ति का उत्सव न किया करें। किसी ने यदि मूर्ति का उत्सव किया तो उसकी सम्पत्ति छीन ली जायगी और उसे बलात् जहाज पर काम करने को लगाया जायगा। (उस समय जहाज पर जाने में हिन्दू अधर्म समझते थे और जाति च्युत कर दिये जाते थे। जाति च्युत होते ही ईसाई बना लिये जाते थे।)

५—जुलाई १५५९ ई० में गोवा के अन्दर ईसाइयों को भूमि कर से मुक्त कर दिया गया और वह कर उसके बदले हिन्दुओं से लिया जाने लगा।

६—१५६० ई० में सभी ब्राह्मणों को गोवा से निकाल दिया गया और उनकी सारी सम्पत्ति ईसाइयों को दे दी गई।

७—८ जून १५६० को गोवा के समस्त स्वर्णकार देश से निकाल दिये गये और उनकी सम्पत्ति ईसाइयों को दे दी गई क्योंकि वे स्वर्णकार मूर्तियों का निर्माण करते थे।

८—**२७ नवम्बर १५६३ का सरकारी आदेश**—"पुर्तगीज राज्य में जो हिन्दू हैं उनको उचित है कि अपनी सब सम्पत्ति ईसाइयों को बेच दें और राज्य से बाहर चले जायँ। जो ऐसा नहीं करेंगे उनकी सब सम्पत्ति छीन ली जायगी और उन्हें आजीवन कठोर सश्रम कारावास में रखा जायगा।"

९—सन् १५६३ में **आदेश हुआ**—"रविवार के दिन जब ईसाई लोग गिरजाघर में प्रार्थना करने लगें उस समय **१५** वर्ष से अधिक आयु वाले सभी हिन्दुओं को वहाँ उपस्थित होना चाहिये जो नहीं आयेंगे उनको व्यापार धन्धा करने की अनुमति नहीं दी जायगी।"

१०—**४ दिसम्बर १५६७ का आदेश**—"हिन्दू अपने घर में हिन्दू धर्म के ग्रन्थ न रखें। जब कोई ब्राह्मण प्रवचन या हरि कीर्तन करने लगे तब वहाँ किसी हिन्दू को नहीं जाना चाहिये। जो जायगा उसे कठोर दण्ड मिलेगा अथवा पीठ पर कोड़े लगाये जायेंगे।"

११—सन् १५७४ में एक सरकारी आदेश द्वारा गोवा में मूर्ति पूजा को मनुष्य हत्या की अपेक्षा घोरतर अपराध बतलाया गया।

१२—**२१ जनवरी १६२० की सरकारी आज्ञा**—"गोवा में हिन्दू पद्धति से विवाह करने का निषेध किया जाता है। जो हिन्दू पद्धति से विवाह करेगा उसको एक हजार मोहर जुर्माना लगाया जायगा। इस जुर्माना का तीसरा भाग उस व्यक्ति को दिया जायगा जो ऐसे विवाह होने की सूचना सरकार को देगा।"

१३—**१८ जनवरी सन् १६७८ का एक विशेष सरकारी आदेश :**— "हिन्दू अपने विवाह भूमि पर न करें वरन् नदियों में नौका के अन्दर करें। परन्तु इस प्रकार करें कि किसी ईसाई को यह कृत्य दिखाई न पड़े अन्यथा जुर्माना किया जायगा।"

ऊपर हमने एक दर्जन से अधिक प्रमाणों को उपस्थित कर यह बतलाने की चेष्टा की है कि गोवा में ईसाइयत ने वहाँ वालों को किस प्रकार नारकीय जीवन बिताने के लिये विवश किया। हमारी ये बातें केवल कल्पना प्रसूत नहीं, अपितु गोवा स्थित एक पुर्तगाली न्यायाधीश की लेखनी से निकली हुई है। इतना ही नहीं उस न्यायाधीश ने लिखा है कि ईसाई प्रचारकों ने अगणित हिन्दू महिलाओं को पकड़ कर अपनी कामपिपाशा शान्त की। उसके पश्चात् उन देवियों को जीवित जला दिया गया। केवल उन्हीं की प्राण-रक्षा हो सकी जिन्होंने ईसाई बनना स्वीकार कर लिया। आश्चर्य है कि इतने क्रूर अत्याचार पर भी गोवा में अभी भगवान् राम और कृष्ण के नाम स्मरण करने वाले शेष हैं। "कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।" वैसे तो "सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमा हमारा"

ऊपर भारत के एक भू-भाग गोवा में होने वाले अत्याचारों का उल्लेख किया गया है और सो भी केवल पुर्तगीज ईसाइयों के द्वारा ही। किन्तु इसी प्रकार सम्पूर्ण भारत ईसाइयों के अत्याचारों से आक्रान्त रहा है। पुर्तगीजों की ही भाँति अंगरेजों ने भी अपनी राजसत्ता के सहारे भारत में खुल कर ईसाई धर्म का प्रचार किया। उदाहरण के लिये उनके भी कुछ कारनामों का दर्शन कराना अनुचित न होगा।

१—सन् १८१३ में इंगलैंड से एक चार्टर की घोषणा हुई जिसमें एक धारा यह भी रखी गई थी कि जो भी अंगरेज पादरी भारतीयों के धार्मिक उद्धार (?) अर्थात् भारतीयों को ईसाई बनाने के लिये जाना चाहे और वहाँ रहना चाहे उसे कानून के द्वारा सभी प्रकार की सुविधा दी जाय। इस आज्ञा का पालन करने के लिये ईसाई धर्म प्रचारकों का एक सरकारी महकमा भी भारत में खोला गया जिसका नाम "एक्लेजियेस्टिकल डिपार्टमेंट" रखा गया। इस महकमे का सारा खर्चा भारत को ही देना पड़ता था। स्पष्ट है कि भारत सरकार भारत के ही खजाने से धन खर्च कर पादरियों और मिशनरियों को नौकर रख कर भारतीयों को ईसाई बनाती थी।

२—कलकत्ता का फोर्ट विलियम कालेज भारतीयों को शिक्षा देने के लिये खोला गया किन्तु उसी कालेज की ओर से इंजील का भारत की ७ भाषाओं में अनुवाद करा कर ईसाई धर्म का प्रचार किया गया। लार्ड वेलेजली का जीवन चरित लिखने वाला आर० आर० बीयर्स स्पष्ट स्वीकार करता है कि शिक्षा के निमित्त खोला गया फोर्ट विलियम कालेज भारत में ईसाई धर्म प्रचार का मुख्य साधन था।

३—मद्रास के गवर्नर विलियम बैंटिंग ने धर्म प्रचार के लिये निम्नलिखित आदेश दिया—(१) पादरी जहाँ भी जाना चाहें उन्हें वहाँ जाने के लिये पासपोर्ट शीघ्र दे दिया जाया करे। (२) ईसाई धर्म प्रचार के सम्बन्ध में नोटिस, पत्रिका, पुस्तकें आदि सरकारी प्रेस में मुफ्त छाप दी जाया करें। (३) सैनिकों में प्रचार करने के लिये पादरियों को खुली छूट रहे। (४) कार्य संचालन के लिये केन्द्र स्थापन के निमित्त अधिक से अधिक भूमि मुफ्त दी जाय। (५) देशी रियासतों के दीवानों पर अपने राज्य के अन्तर्गत ईसाई धर्म प्रचार के लिये दबाव डाला जाय। यही विलियम बैंटिंग जब लार्ड विलियम बैंटिंग बनकर भारत का गवर्नर जनरल बना तब उसने असंख्य प्राचीन मन्दिरों पर चढ़ी भूमि छीन कर गिरजा घरों को दे दी और कानून बनाया गया कि यदि कोई ईसाई बन जाय तो उसकी पैतृक सम्पत्ति पर उसका

पूर्ववत् अधिकार बना रहेगा। इसी प्रकार अंग्रेजी सरकार के प्रत्येक अधिकारी ने अपने अधिकार का प्रयोग करके भारतवासियों को ईसाई बनाया।

४—ईस्ट इंडिया कम्पनी के अध्यक्ष मि० मैंगलेस ने १८५७ में पार्लियामेंट में भाषण करते हुए कहा था "परमात्मा ने हिन्दुस्तान का विशाल साम्राज्य इंगलिस्तान को सौंपा है ताकि हिन्दुस्तान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक ईसा मसीह का विजयी झंडा फहराने लगे। हम में से हर एक को अपनी पूरी शक्ति इस काम में लगा देनी चाहिये ताकि समस्त भारत को ईसाई बनाने के महान कार्य में देश भर के अन्दर कहीं पर भी किसी कारण जरा भी ढील न होने पाये।"

५ - इंगलैंड के एक विशिष्ट विद्वान रेवरेंड कैनेडी ने लिखा है—"हम पर कुछ भी आपत्तियाँ क्यों न आयें, जब तक भारत में हमारा साम्राज्य कायम है तब तक हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि हमारा मुख्य कार्य इस देश में ईसाई मत को फैलाना है। जब तक रास कुमारी से लेकर हिमालय तक का सारा हिन्दुस्तान ईसा के मंत को ग्रहण न कर ले और हिन्दू तथा मुसलमान अपने धर्मों की निन्दा न करने लगें तब तक हमें लगातार प्रयत्न करते रहना चाहिये। इस कार्य के लिये हम जितने भी प्रयत्न कर सकें, हमें करने चाहिये और हमारे हाथों में जितने भी अधिकार और जितनी भी सत्ता है उसका इसी के लिये उपयोग करना चाहिये।"

ऊपर के अनुच्छेदों में पाठकों ने विदेशियों द्वारा अपने अधिकार और अपने पदों का दुरुपयोग करके भारत में ईसाईयत के प्रचार का रूप देखा और देखा अंग्रेजों द्वारा ईसाई धर्म प्रचार की दूषित मनोवृत्ति को। अब जरा उनके प्रचार की विधियों का भी दर्शन करें।

मिशनरियों के प्रचार की विधि

यह निर्विवाद सत्य है कि असत्य और कुकृत्य सदा अन्धकार में किया जाता है। सच्चाई और शुभ कर्म सदैव प्रकाश में होता है। जैसा कि ऊपर बतलाया गया है ईसाई धर्म में कोई सच्चाई नहीं है। इसी लिये उसके प्रचारक समझदारों और शिक्षितों में ईसाई धर्म की विशेषता बतला कर

उन्हें दीक्षित करने में असमर्थ हैं। हाँ, अपढ़ों, असभ्यों, जंगलियों, पहाड़ियों, हरिजनों और निर्धनों में, जहाँ अविद्या और अभाव है, वहाँ इनकी खूब बन आती है। वे छल कपट के द्वारा बहका कर अथवा अन्य घृणित साधनों का उपयोग करके निरीह जनों को ईसाई बनाते हैं। उनके कुछ हथकण्डों को देखें और उससे सावधान हों।

१—अस्पतालों में मिशनरी डाक्टर रोगियों का उपचार करते हैं किन्तु रोगियों को विश्वास दिलाते हैं कि उन रोगियों पर औषधि तुरन्त लाभ करेगी जो ईसाई बन जाये। उनके इस बहकावे में आकर कुछ भ्रान्त जन प्राण रक्षा के नाम पर ईसाई बन जाते हैं।

२—जंगली, आदि वासी तथा अन्य पिछड़े जन प्रायः अन्ध विश्वासी होते हैं। उन्हें भूत प्रेत का भय रहता है। ईसाई मिशनरी उनके अन्ध-विश्वास से लाभ उठाते हैं और उनसे कहते हैं कि भूत तुम्हारी चोटी में रहता है। इस प्रकार भूत भगाने के बहाने भोले-भालों की चोटी काट लेते हैं और उन्हें ईसाई बना लेते हैं।

३—ईसाई मिशनरी घोर पिछड़े लोगों में जाते हैं और साथ में धातु से बनी हुई ईसा की मूर्ति तथा काष्ठ से बनी हुई राम कृष्ण शिव आदि की मूर्ति ले जा कर कहते हैं कि आओ तुम्हारे और अपने देवताओं की परीक्षा करें। अग्नि में पड़ कर जो बच जाय वह सच्चा और जो जल जाय वह झूठा देवता होगा। झूठे देवता को त्याग कर सच्चे देवता को अपनाया जाय। इतना कह मूर्तियाँ जलती अग्नि में डाल देते हैं। लकड़ी की राम कृष्ण शिव आदि की मूर्तियाँ जल जाती हैं और धातु की बनी ईसा की मूर्ति बच जाती है। इस प्रकार गलत भावना देकर और उन्हें हारा हुआ बतला कर ईसाई बना लेते हैं। इसके विपरीत कभी-कभी ईसा की काष्ठ निर्मित मूर्ति और राम कृष्ण आदि की धातु से बनी मूर्ति लेकर जाते हैं और कहते हैं कि इन मूर्तियों को पानी में डालो। जिस देवता की मूर्ति पानी में न डूबेगी वही सच्ची है और वही सब को संसार सागर से पार करने में समर्थ होगी। पानी में डालने पर लकड़ी की ईसा की मूर्ति

तैरती रहती है। इस प्रकार भी गलत भावना दे कर मूढ़ों को ईसाई बनने पर विवश करते हैं।

४—ईसाई मिशनरी गरीब लोगों को ऋण देते हैं। ऋण प्राप्त करने में शर्त यह रहती है कि (१) ऋण लेने के पूर्व चोटी कटानी पड़ेगी। (२) ऋण लेने के पश्चात् प्रति रविवार प्रार्थना के समय गिरजाघर में जाना आवश्यक होगा। (३) ऋण की ब्याज निरन्तर बढ़ती रहती है। ईसाई बन जाने पर पूरा ऋण माफ किया जाता है। ऋण का यह चक्र आज आदिवासियों और निर्धन वनवासियों पर अबाधगति से चल रहा है।

५—कभी-कभी तो देवता कहे जाने वाले ये ईसाई पादरी दूसरों को ईसाई बनाने के लिये इस प्रकार धूर्तता और जालसाजी करते हैं कि उनकी इस मक्कारी को जानकर आश्चर्य चकित हो जाना पड़ता है। उदाहरण के लिये एक ही तथ्य पर्याप्त होगा।

'नव भारत' दिल्ली के २२ जून सन् ५० के अंक में श्री कन्हैयालाल मिश्र का एक लेख छपा था। उसका कुछ अश इस प्रकार है :—

"सन् १६०० में सेंट थामस नामक पादरी त्रिवेन्द्रम् (ट्रावनकोर) से ४० मील दूर 'कवैलन' नामक बन्दरगाह पर उतरा। उसने सारे राज्य में भ्रमण कर यह अनुभव किया कि इस राज्य के निवासी कट्टर हिन्दू हैं। ये साधारण प्रचार से ईसाई नहीं बन सकते। यहाँ के हिन्दुओं का वेदों पर पूर्ण विश्वास है। यह सोच कर वह काशी आया और अपने को नैपाली ब्राह्मण बतला कर उसने संस्कृत पढ़ना प्रारम्भ किया। ६ वर्ष तक संस्कृत पढ़ने के पश्चात वह सन्यासी का रूप धारण कर पुनः ट्रावनकोर राज्य में आया। वहां एक स्थान पर बैठ कर उसने संस्कृत में "जजरवेद" नामक एक पुस्तक लिखी उसमें उसने बाइबिल में जहाँ-तहाँ वर्णित ईसामसीह के चमत्कार संकलित किये। इसे पूर्ण कर लेने के बाद उसने ट्रावनकोर की राजधानी त्रिवेन्द्रम् से ४२ मील दूर 'नगरकोयल' में सन् १६१६ ई० में बड़ा सुन्दर मण्डप बना उस जजरवेद की कथा को वेद कथा नाम से कहनी प्रारम्भ की। वह कथा एक वर्ष तक चलती रही। कथा सुनने के

लिये दूर-दूर से हिन्दू जनता उमड़ पड़ी और बड़ी श्रद्धा पूर्वक सुनती रही एक वर्ष समाप्त होने पर पूर्णाहुति का समय आया। हिन्दुओं ने एक बड़ा भोज अयोजित किया जिसमें १०१ ब्राह्मण तथा शेष नायर आदि दूसरी जातियों के लोग थे। उस भोज में सब की कुल संख्या दस सहस्र थी। सब प्रकार का भोजन बनाया गया। नकली सन्यासी जी बराबर भोजनालय में आते जाते रहे और ध्यान पूर्वक बनती रसोई की परीक्षा करने के बहाने प्रत्येक पदार्थ को निकाल-निकाल कर देखते जाते थे। भोजन बना। यज्ञ मण्डप के अन्दर ब्राह्मण लोग बैठे। उससे बाहर मैदान में शेष स्त्री पुरुष सन्यासी जी की आज्ञा से एक साथ पंक्तिबद्ध बैठ गये। केले के पत्तों पर बिधि पूर्वक भोजन परसा गया। सन्यासी जी खड़ाऊँ पहने एक ओर से दूसरी ओर तक इसलिये घूमे कि वे स्वयं देखकर सन्तोष कर लें कि प्रत्येक पदार्थ मिल गया है। सब ओर चक्कर लगाने के बाद उन्होंने सबको भोजन करने की आज्ञा दी। लोगों ने भोजन करना प्रारम्भ किया। जब सब लोगों का भोजन लगभग समाप्त हो रहा था, उसी समय सन्यासी शीघ्रता से अपने निवास स्थान के भीतर घुसा और अपने पादरी का वस्त्र पहन कर बाहर निकला और भोजन करते हुए हिन्दुओं के बीच घूमने लगा। उसने घोषित किया कि वह वास्तव में सन्यासी नहीं बल्कि ईसाई पादरी है। हिन्दू जनता अवाक् रह गई। उसमे से कुछ लोगों को अत्यन्त क्रोध आया। वे उठे और पादरी साहब को पकड़ कर भूमि पर पटका और गला घोंट कर एक मिनट में ईसा मसीह के पास पहुँचा दिया। सन्यासी जी तो मर गये किन्तु १० हजार हिन्दुओं को एक साथ ईसाई बनाते गये। अन्य हिन्दुओं ने इस घटना को सुनकर उन दश सहस्र हिन्दुओं का बहिष्कार कर दिया। वह 'जजर वेद' पुस्तक इस समय पेरिस के अजायब घर में रखी हुई है। इसी से ईसाइयों की इस राज्य में जड़ जमी। इन्हें ईसाई बनाने में सेंट थामस ने बाइबिल की कथा वेद कथा कहकर सुनायी थी अतः ये लोग बाइबिल को वेद के नाम से पुकारने लगे और उनके मिशनरी वैदिक मिशनरी के नाम से प्रसिद्ध हुए।'

पाठक देखें, सेंट थामस ने किस प्रकार धोखा देकर अपने को नैपाली ब्राह्मण बतला कर और सन्यासी बन कर भोली भाली हिन्दू जनता का विश्वास भाजन बना और फिर कैसे उनके साथ विश्वास घात कर के उनके धर्म का अपहरण किया। विदेश से आये हुए थामस के अन्दर यह शक्ति न थी कि वह अपने धर्म की विशेषता बतला कर हिन्दू जनता को अपनी ओर आकर्षित करे तब उसने छल से काम लिया और सेंट (साधु) शब्द को भी बदनाम किया। परन्तु ईसाइयों ने सेंट थामस की इस लज्जा जनक करतूत पर पश्चात्ताप नहीं किया अपितु उसे एक आदर्श महात्मा माना तथा आज भी जितनी शिक्षा सस्थायें खोलते हैं, प्रायः सेंट थामस के नाम पर खोलते हैं और इस प्रकार उसके नाम को अमर बनाये रखना चाहते हैं। इतिहास के पृष्टों में ऐसे ही अनेक की काली करतूतें उपलब्ध होती हैं। प्रायः इसी प्रकार की घटना राबर्ट डी० नोबुली के नाम से भी प्रसिद्ध है। अस्तु,

ऊपर हमने ईसाइयों के कुछ कारनामों को प्रकट कर यह दिखलाने की चेष्टा की है कि ईसाई किस प्रकार हम भारतवासियों के ऊपर अमानुषिक अत्याचार किये हैं और धर्म के नाम पर किस प्रकार अधर्म का प्रचार करके भारतीय समाज को भ्रष्ट करने में अपने घृणित से घृणित साधनों का उपयोग करते रहे हैं। भारत में विदेशी सरकार के होने से उन्हें यथा रुचि बढ़ने और अपने पापाचरण के विस्तार करने का खुला अवसर मिला। आशा थी कि विदेशी सरकार के हटने से हम भारतीय, ईसाइयों की इस माया जाल से मुक्त हो जायगे और विदेशी मिशनरी तथा प्रचार के उनके विदेशी साधन सब समाप्त हो जायगे। पर खेद है कि स्वदेशी सरकार की धर्म निरपेक्षता की नीति ने हमारी आशाओं पर पानी फेर दिया। भारत सरकार ने स्वयं तो कोई धर्म स्वीकार नहीं किया पर सभी को अपने धर्म प्रचार की खुली छूट दे दी। ईसाई मिशनरी, जो अपना बोरिया बिस्तर सँभाल कर स्वदेश जाने को तैयार हो चुके थे और जिन्हों ने यह समझ रखा था कि स्वराज्य-सूर्य के उदय हो जाने से अब मिशनरी-उलूक को

मुँह छिपाना ही पड़ेगा, वे ही भारत सरकार की इस घातक नीति से लाभ उठाने के लिये दूने और चौगुने उत्साह से तैयार हो गये और संक्रामक रोग के कीटाणुओं की भाँति पूरे देश में व्याप्त हो गये। विदेशी राज सत्ता के अन्दर ३०० वर्षों में नाना प्रकार के जोर और जुल्म करके भी जितना प्रचार नहीं कर सके थे, उससे कहीं अधिक प्रचार उन्होंने विगत २० वर्षों में कर डाला। आज ईसाई मिशनरी केवल धर्म प्रचारक ही नहीं, अपितु राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को लेकर पूरे भारत पर ईसाई साम्राज्य की स्थापना का स्वप्न देख रहे हैं और उनके इस स्वप्न को साकार बनाने के लिये विश्व के सभी ईसाई देश मुक्त हस्त हो अपने-अपने खजानों से धन भेज रहे हैं। अतः विदेशी धन भारत की राष्ट्रीयता का विनाश करने के लिये तथा भारत की प्रभु सत्ता अपहरण करने के लिये पानी की तरह बहाया जा रहा है जिसका परिणाम भारत में अराजकता तथा विद्रोह का विस्तार हो रहा है।

ईसाइयों के अराष्ट्रीय कार्य तथा भारत सरकार की अदूर दर्शिता

स्वराज्य के पूर्व भारत में अंग्रेजी राज्य था। अंग्रेजों ने जब यह अनुभव किया कि नगरों और अच्छे स्थानों में आर्य समाज के तर्क के सामने ईसाई मिशनरियों की दाल गलनी सम्भव नहीं है तब उन्होंने जंगली और पहाड़ी भागों की ओर मिशनरियों का मुख मोड़ दिया और जंगली तथा पहाड़ी भागों को सुरक्षित स्थान घोषित कर दिया। सुरक्षित स्थान का अर्थ यह था कि उक्त स्थानों पर ईसाई मिशनरी खुल कर खेलने के लिये स्वतंत्र हैं, वे बिना रोक टोक वहाँ जा कर कुछ भी कर सकते हैं, पर दूसरा कोई बिना सरकारी आज्ञा प्राप्त किये वहाँ नहीं जा सकता। इस पक्षपात पूर्ण स्थिति से ईसाइयों ने खूब लाभ उठाया और सभी जंगली तथा पहाड़ी भागों में मन चाहे ढंग से हिन्दुओं को ईसाई बनाया। आशा थी कि स्वराज्य होने पर अपनी सरकार विवेक से काम लेगी और इस काले कानून को समाप्त कर न केवल सभी के लिये घने जंगलों और पहाड़ी इलाकों का मार्ग खोल देगी अपितु ईसाइयों द्वारा बलात् ईसाई बनाये गये लोगों को पुनः

अपने धर्म में वापस आने की सुविधा प्रदान करेगी। परन्तु शोक है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के २१ वर्ष बीत जाने पर भी अभी वह काला कानून ज्यों का त्यों विद्यमान है। फलतः विदेशी ईसाई मिशनरी तो भारत के जंगली और पहाड़ी भागों का कोना-कोना बिना किसी रुकावट के छान सकता है पर भारत के आर्य सामाजिक अथवा अन्य धर्म प्रचारक बिना भारत सरकार की आज्ञा प्राप्त किये उक्त स्थानों में जाने और अपने ही भाइयों की दयनीय स्थिति पर समवेदना के आँसू बहाने अथवा उन तक वेद का सन्देश पहुँचाने में असमर्थ हैं। देश के लिये इससे बढ़ कर और कौन सा दुर्भाग्य हो सकता है? सरकार की इस अदूरदर्शिता के कारण देश का सारा जंगली और पहाड़ी भाग ईसाइयों से भर गया है और सर्वत्र अराजकता तथा विद्रोह की आग धधक रहा है। आज नागा लैंड, मिजो, झारखंड आदि सारी समस्यायें इसी काले कानून का परिणाम है। सर्वत्र विदेशी ईसाई मिशनरी ईसाई बने हुये लोगों को भड़का और बहका कर अराष्ट्रीय बना रहे हैं और पाकिस्तान की भाँति अपना स्वतन्त्र राज्य बनाने के कुचक्र में लगे हुए हैं। आसाम में अलग पहाड़ी राज्य की माग, मिजो पहाड़ी का उग्र प्रतिरोध, नागा लैंड का सशस्त्र संघर्ष, आदि तो है ही, "मध्य प्रदेश में सरगूजा जिला के आस पास आदि वासियों को ईसाई बना कर उन्हें "क्रिश्चियन लैंड" के नाम से एक स्वतन्त्र राज्य बनाने की पूरी तैयारी की जा रही है। इसके लिये विदेशी ईसाई मिशनरी एड़ी चोटी का पसीना एक कर रहे हैं। जसपुर, पत्थर गाँव, रायगढ़, रायपुर, रामानुजगंज और अम्बिकापुर इस षड्यन्त्र के केन्द्र हैं। इस क्षेत्र में स्वतन्त्रता के बाद ईसाई मिशनरियों की गति विधियाँ दिन प्रति दिन तेज होती गई हैं। भोले भाले आदि वासियों को छल, बल और धमकी देकर भी ईसाई बनाया जा रहा है। स्वतन्त्रता के पूर्व सरगूजा एक रियासत थी। राजा साहब द्वारा उनके राज्य में धर्म परिवर्तन की मनाही थी। इस कारण सन् १९४६ में राँची के लूथर्न मिशन और प्रोटेस्टेंट मिशन ने एक निश्चित योजना के अनुसार राँची-पलामू क्षेत्र से अपने दीक्षित ईसाई बने ६०० उराँव लोगों को हिन्दू रूप में सरगुजा में बसने के लिये भेजा और वे वहाँ कृषक के रूप

में बस गये। रियासत की समाप्ति पर उन्होंने अपने धर्म परिवर्तन की घोषणा कर दी। उनके इस षड्यन्त्र से अब तक सरगुजा जिले में ३३ हजार ईसाई बनाये जा चुके हैं। गुप्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि कैथोलिक मिशन ने अपने कार्यकर्ताओं से कहा है कि "नागा लैंड में हम क्रिश्चियन स्टेट बनाने में सफल हुये हैं, मिजो लैंड भी हमारी विजय का प्रतीक है। अब हमें राँची, पलामू, पूर्णिया, उड़ीसा और मध्य भारत के क्षेत्रों को मिला कर क्रिश्चियन लैंड की माँग करनी चाहिए और क्रिश्चियन लैंड की इस बेल्ट को मिला कर केरल में मिलाते हुए गोवा तक एक शृंखला में हमें अपनी स्टेट बनाने में लग जाना चाहिये।"

प्रिय पाठक गण! क्या इस लम्बे उद्धरण से आप के समक्ष मिशनरियों की दूषित मनोवृत्ति स्पष्ट होने में कुछ कमी रह गई है? वे मिजो और नागा लैंड को अपना राज्य समझते हैं। मध्य भारत, बिहार और उड़ीसा में राज्य की माँग कर रहे हैं। केरल में अपना बहुमत समझ रहे हैं। गोवा उनका आदि गढ़ है ही। इस प्रकार केरल और गोवा से लेकर नागा लैंड और मिजो तक लगभग २०० मील चौड़ी और हजारों मील लम्बी पट्टी पर अपने स्वतन्त्र राज्य का स्वप्न देख रहे हैं। यदि हम भारत-वासी कान में तेल डाल कर बैठे रहे और भारत सरकार ने विवेक से काम न लिया तो उनके स्वप्न साकार होने में देर नहीं है। पर देखते हैं तो सरकार विवेक से काम नहीं ले रही है। आसाम में पहाड़ी राज्य की माँग पर वार्ता चल रही है। पहाड़ी भाग की $\frac{3}{4}$ जनता अब भी हिन्दू है। वहाँ के हिन्दू पहाड़ी राज्य की माँग नहीं कर रहे हैं। केवल $\frac{1}{4}$ भाग के ईसाई ही उक्त राज्य की माँग कर रहे हैं। पर खेद है कि आसाम के पहाड़ी भाग की जन संख्या का $\frac{3}{4}$ भाग अशिक्षित है शेष $\frac{1}{4}$ भाग में ईसाई मिशनरी ही सब का नेतृत्व कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि पहाड़ी भाग का पृथक राज्य बन जाने पर हमारे हाथ में शक्ति होगी और हम तब पूरी जन संख्या को सरलता से ईसाई बना कर शुद्ध ईसाई स्थान बना लेंगे। शोक है कि भारत सरकार ने उनकी दुराग्रह पूर्ण माँग को १२ सितम्बर सन ६८ को लगभग

स्वीकार कर लिया है।

यही अवस्था नागा लैंड की है। नागा लैंड की कुल जन संख्या ६ लाख १० हजार है। उनमें १ लाख २५ हजार ईसाई तथा २ लाख ८५ हजार हिन्दू हैं। हिन्दू नागाओं की नेता रानी गदायलू एक सार्वजनिक कार्य कर्त्ता हैं, उन्होंने कांग्रेस के साथ राष्ट्र की लड़ाई में पूरा योग दिया। भारत सरकार को उचित था कि जब नागा लैंड का पृथक राज्य स्वीकार किया गया तब २ लाख ८५ हजार का नेतृत्व करने वाली रानी गदायलू को ही नेता मानती, किन्तु ऐसा न कर एक लाख २५ हजार ईसाइयों की बात मान कर उन्हीं को अपनी सरकार बनाने का अवसर दिया। फलतः आज नागा लैंड की सरकार में मन्त्रिमंडल तथा वरिष्ट अधिकारियों में से एक भी व्यक्ति हिन्दू नहीं है। विद्रोही नागा सब के सब ईसाई हैं और सब के सब विदेशी मिशनरियों के प्रभाव में आ, उन्हीं की देख रेख में काम करके भारत के अन्दर राष्ट्र विरोधी कार्य करने में तत्पर हैं। भारत सरकार आये दिन उनकी गति-विधि की कुटिलता देख रही है फिर भी छिपे विद्रोही नागाओं से वार्ता करने में उन्हीं विदेशी मिशनरियों को मध्यस्थ बनाती है। "चमड़ा का बाकस और कुत्ता रखवार"। भला इससे बढ़ कर भारत सरकार की अदूरदर्शिता और क्या होगी?

कलकत्ता से ८०० मील दूर बंगाल की खाड़ी में अण्डमान नीकोबार द्वीप समूह है। इसमें कुल २०३ द्वीप हैं। केवल नीकोबार में १६ द्वीप पुंज हैं। पहाड़ी इलाकों की भाँति ही इन द्वीप पुंजों को भी सरकार ने सुरक्षित घोषित कर दिया था। फलतः विदेशी ईसाई मिशनरी तो वहाँ स्वतन्त्रता पूर्वक धर्म प्रचार करते रहे पर दूसरों का वहाँ जाना निषिद्ध था। आज भी उक्त काला कानून काला पानी के उक्त भू-भाग पर विद्यमान है। वहाँ सन् १६३१ में २३२ ईसाई थे। १६४१ की गणना में १०११ हो गये। १६५१ में ६००० और अब १६६१ की जन गणना में वहां की कुल जनसंख्या १३६७३ में १०५५५ ईसाई हैं। इस प्रकार सामरिक महत्व के स्थान पर ईसाइयों का पूरा-पूरा अधिकार है जो किसी दिन भारतीय राष्ट्र के लिए विघातक सिद्ध हुए बिना न रह सकेगा। इन सारे

गुरु. विरजा... सन्दर्भ पु... 5250
परिग्रहण क्रमांक ...
दयानन्द महिला महाविद्यालय

तथ्यों को प्रकट करने के पश्चात हम इस निश्चय पर पहुंचने के लिए बाध्य होते हैं कि यदि भारत सरकार ने कुछ भी दूरदर्शिता से काम लिया होता तो देश ऐसी भयावह स्थिति में कदापि न पहुँचता।

भारतीय जन संख्या और ईसाई

हमने ऊपर ईसाइयों की बढ़ती हुई जन संख्या का किंचित उल्लेख किया है। उनकी जन संख्या में अधिक वृद्धि मुख्यत: पर्वतीय और जंगली क्षेत्र में हुई है जहां अधिकतर अशिक्षित भोले आदिवासी निवास करते हैं। उनकी वृद्धि के प्रदेश क्रमानुसार इस प्रकार हैं—मध्यप्रदेश १३०.४७ प्र०श० राजस्थान १००.१६ प्र.श० आसाम ४६.८६ प्र०श० पांजाब ५१.५६ प्र०श० उड़ीसा ४१.६३ प्र.श. वृद्धि हुई है इनका सबसे सघन क्षेत्र नागा लैंड तथा आसाम की पहाड़ियों का क्षेत्र है जो वास्तव में सामरिक महत्व के क्षेत्र में स्थित है। ईसाइयों का दूसरा सघन क्षेत्र दक्षिण बिहार पश्चिमी-उड़ीसा और झारखंड प्रदेश है जहाँ वे झारखंड राज्य के निर्माण का प्रयत्न कर रहे हैं। तीसरा क्षेत्र केरल है जिसे वे अपना राज्य समझते ही हैं। चौथा नया क्षेत्र राजस्थान है जहाँ की वन्य जातियों में वे मत परिवर्तन का कार्य तीव्रता से चला रहे हैं। मध्य प्रदेश के १६ जिलों में ईसाइयों कि संख्या बढ़कर तिगुनी हो गई है। पूरे भारत वर्ष में सन् १९६१ की जनगणना के अनुसार निम्नलिखित प्रकार हैं जिन्हें देख कर सहज ही इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है कि ईसाइयत किस प्रगति से बढ़ रही है।

प्रान्त	कुल जन सं०	कुल जन सं० में हिन्दू प्र०श०	वृद्धि प्र०श०,	ईसाई प्र०श०	वृद्धि प्र०श०
आन्ध्र	३५९८३४४७	८८.४१	१५.६६	३.९७	१५.९१
आसाम	११८७२७७२	६६.४१	३३.९६	६.४४	५६.८९
बिहार	४६४५५६१०	८४.७०	१८.६६	१.०८	२०.८१
गुजरात	२०६३३२५०	८८.९१	२८.११	०.४४	१६.६६
जम्बू कश्मीर	३५६०९७६	२८.४५	अप्राप्य	०.०८	अप्राप्य

प्रान्त	कुल जन सं०	कुल जन सं० में हिन्दू प्र०श०	वृद्धि प्र०श०	ईसाई प्र० श०	वृद्धि प्र० श०
केरल	१६९०३७१५	६०·८३	२२·२३	२१·२२	२६·९५
मध्य प्रदेश	३२३७२४०८	९३·९९	२३·१४	०·५८	१३२·४७
मद्रास	३३६८६९५३	८९·९४	११·१३	५·२३	२३·५१
महाराष्ट्र	३९५५३७१८	८२·२४	१३·५८	१·४२	२९·२८
मैसूर	२३५८६७७२	८७·२७	२१·९०	२·०७	१६·५२
उड़ीसा	१७५४८८४६	९७·५७	१९·५९	१·१५	४१·६३
पंजाब	२०३०६८१२	६३·६७	३०·८६	०·७४	५१·५६
राजस्थान	२०११५०००	८९·९६	२५·४४	०·११	१००·१९
उत्तर प्रदेश	७३७४६४०१	८४·६६	१६·१३	०·१४	१७·९५
प० बंगाल	३४९२६२७९	७८·८०	३२·६३	०·५९	१२·५२
अंडमाननीकोबार	६३५४८	५१·५८	२५२·७१	२८·८८	८९·३१
दिल्ली	२६५८६१२	८४·०५	५२·२४	१·१०	५६·६४
हिमांचल प्रदेश	१३५११४४	९६·९६	२०·३१	०·०४	८६·७५
मनीपुर	७८००३७	६१·६८	३८·५२	१९·४९	१२२·३०
त्रिपुरा	११४२००५	७६·०१	८०·५८	०·८८	९०·७८
गोवा,डामन,ड्यू	६२६६६७	६१·३४	१०·४१	३६·२५	२·६७

उपर्युक्त आँकड़ों के आधार पर स्पष्ट व्यक्त हो रहा है कि ईसाइयों की वृद्धि प्रतिशत तीव्रता से आगे जा रही है। सम्भव है गणना के समय मिशनरियों की छल प्रवृत्ति से जन संख्या अधिक लिख दी गई हो फिर भी जो आँकड़े समक्ष उपस्थित हैं उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। अपने उत्तर प्रदेश में भी उनकी जन संख्या का प्रतिशत् प्रायः पहाड़ी भागों अथवा पूर्वी उत्तर प्रदेश में बढ़ा है। पहाड़ी भाग के चमोली जनपद में तो संख्या बहुत अधिक बढ़ी है जो निम्नलिखित आँकड़ों से प्रकट होती है। चमोली जनपद में १९००·०० प्रतिशत। बाराबंकी में ३९३·४८ प्र०श०, जौनपुर में २२१·२१ प्रतिश०, सुलतानपुर में १९२·६३ प्रतिश०, उन्नाव में १५३·०९

प्रतिश०, मिर्जापुर में ८२·३३ प्र०श०, आजमगढ़ में ८०·२६ प्र०श०, और वाराणसी में ७१·४१ प्र०श० वृद्धि हुई। स्पष्ट है कि चमोली जनपद में सन् ५१ से ६१ तक केवल १० वर्षों में १०० के स्थान पर १६०० ईसाई हो गये। उसी प्रकार जौनपुर जनपद में १०० के स्थान पर २२१ से भी अधिक और सुलतानपुर में १०० के स्थान पर लगभग २०० ईसाई बढ़ गये। पर हिन्दुओं की संख्या उत्तरोत्तर क्षीण हो हुई है। बढ़ोत्तरी की यही स्थिति रही तो थोड़े ही दिनों में भारत की क्या स्थिति होगी? उसकी कल्पना मात्र से हृदय सिहर उठता है।

धन बल से धर्म प्रचार

ऊपर के स्तम्भों में हमने देखा कि शुद्ध धार्मिक प्रचार के लिये नहीं अपितु साम्राज्य विस्तार के लिए भारत में ईसाइयत की शिक्षा दी जा रही है। ईसाई मिशनरियों ने जहाँ कहीं ईसा का संदेश पहुँचाया उसी भू-भाग को हथिया लिया। आज भारत के विस्तृत भू-भाग पर उनकी गृद्ध दृष्टि लगी हुई है इसीलिये विश्व का सर्वाधिक् सम्पन्न देश अमरीका अपने डालर के बल पर भारत में ईसाइयत का प्रचार करके उसे आत्मसात करना चाहता है। भारत में विदेशों से कितना धन आ रहा है और उसके बल पर कितनी ईसाई संस्थायें तथा कितने ईसाई मिशनरी भारतीयों को ईसाई बनाने में लगे हुए हैं? इसका उत्तर जिम्मेदारी के साथ निम्नलिखित प्रकार है:—

विदेशी मिशनरियों के काम के सम्बन्ध में पूछे गये एक प्रश्न के उत्तर में १५ अप्रैल सन् १९५३ को राज्य परिषद् के अन्दर उपगृह मंत्री श्री बी० यन० दातार ने बतलाया—"इस समय भारत में ६५ कैथोलिक तथा ५० प्रोटेस्टेंट संस्थायें काम कर रही हैं।" उन्होंने बतलाया कि "१९५० से १९५२ तक १७८९ मिशनरी भारत में आये। इसमें राष्ट्र मंडलीय देशों से आये ईसाई मिशनरी सम्मिलित नहीं हैं जो विदेशियों पर लागू होने वाले कायदे कानून के आधीन नहीं है।"

अभी अभी २८ जुलाई सन् ६८ को विहार राज्य-भारत-साधु-समाज के सचिव श्री भगवती शरण दास के एक वक्तव्य के आधार पर "सार्व-

देशिक" साप्ताहिक में छपा था कि "सम्प्रति भारत में ७३२५ विदेशी मिशनरी भारतीयों को ईसाई बनाने के काम में लगे हुए हैं। उनमें १५०० छोटा नागपुर में, ५०० आसाम में, ७०० उड़ीसा में और शेष भारत के अन्य भागों में कार्यरत हैं। उनके द्वारा प्रति वर्ष १५ हजार भारतीय ईसाई बनाये जा रहे हैं।" पाठक स्वयं विचार करें कि जब एक दो नहीं, ११५ ईसाई संस्थायें अपने दल बल के साथ भारत को ईसाई बनाने में लगी हों और जिस काम के लिये केवल ३ वर्षों में १७८९ प्रचारक बाहर से आये हों तथा उनके अतिरिक्त इंगलैंड साम्राज्य के अन्तरगत रहने वाले देशों से भी प्रचारकों का दल उमड़ पड़ा हो तब देश की स्थिति क्यों न दयनीय बन जाय? यही नहीं, अपितु उक्त श्री दातार ने बतलाया कि "इनके अतिरिक्त हजारों देशी ईसाई प्रचारक भी कार्य में संलग्न हैं।" तब तो प्रचारकों की संख्या अनन्त कही जा सकती है। इस कार्य में कितना धन व्यय किया जा रहा है? इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि केवल छत्तीसगढ़ में ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिये १ वर्ष में अमरीका ने २० लाख डालर दिया है। एक डालर लगभग साढ़े सात रुपयों के बराबर होता है। अतः उक्त डालरों से अमरीका ने १ वर्ष में १ करोड़ ५० लाख रुपया व्यय किया। १३ दिसम्बर सन् १९५४ को लोक सभा में संसद सदस्य श्री ए० के० गोपालन के प्रश्न का उत्तर देते हुए भारत के राजस्व मन्त्री श्री एम० सी० शाह ने बतलाया कि जनवरी १९५० से जून १९५४ तक केवल ३½ वर्षों में विदेशी मिशनरियों को बाहर से २९·२७ करोड़ रुपया मिला। उक्त धन में से अकेले अमरीका से २०·६८ करोड़ रुपये प्राप्त हुए हैं। रुपया के अवमूल्यन से उक्त धनराशि ५७ प्रतिशत् और बढ़ गई। इस प्रकार केवल ३½ वर्षों में लगभग ५० करोड़ की धन राशि विदेशियों ने भारत में प्रचार करने वाले मिशनरियों के पास भेजा। यह तो वह धन-राशि है जो रिजर्व बैंक के माध्यम से मिशनरियों को मिलती है और जिसके सम्बन्ध में भारत सरकार को पूरी जानकारी है। परन्तु अब तो कुछ ऐसे साधनों से मिशनरियों को धन उपलब्ध हो रहा है जिससे सरकार

अवगत भी नहीं हो पाती। अमरीका हमको ४८० पल० कानून के अनुसार अन्न देता है और उसका मूल्य डालर में न लेकर रुपयों में लेता है। हम उसकी इस उदारता का आभार मानते हैं। अमरीका को अधिकार प्राप्त है कि वह चाहे तो हमसे धन वसूल कर स्वयं भारत में व्यय करे या उससे अन्य सामग्री क्रय करे। अब तक अमरीका का यह पावना ८ अरब रुपये होता था पर अवमूल्यन के कारण अब १२ अरब से अधिक हो गया है। पिछले दिनों श्री कृष्णमाचारी के एक वक्तव्य से प्रगट है कि इस फंड से अमरीकी राज दूत ने ८० करोड़ निकाला था जो अवमूल्यन के कारण १ अरब २० करोड़ हो गया। पर उसका अधिकांश ईसाई मिशन को प्राप्त हुआ जिसका भारत सरकार को पता नहीं है। जब इतना अपार धन मिल रहा हो तब ईसाई मिशन के सामने कठिनाई ही किस बात की? यही कारण है कि रुपया पानी की तरह बहा कर रोटी का प्रलोभन दे चोटी काटी जा रही है और इसी आर्थिक प्रलोभन में पड़ कर भ वान राम और कृष्ण के निर्धन भक्त धर्म के रूप में अपना सर्वस्व ईसाइयत की वेदी पर चढ़ाते जा रहे हैं। हिसाब लगा कर बतलाया गया है कि भारत में ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए साढ़े सात लाख रुपया प्रति दिन व्यय किया जा रहा है। अस्तु, अब हमें जागरुक होने की आवश्यकता है। यदि अब भी न जागे और आर्यत्व के रक्षा की चेष्टा न किया तो भगवान ही बेड़ापार लगाये।

हमारा कर्तव्य

देश की ऐसी भयावह स्थिति में अपने धर्म की रक्षा के लिये तथा देश की राष्ट्रीयता और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये अब हमें क्या करना चाहिये? क्या हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहें और राष्ट्र का तथा अपने धर्म का विनाश अपनी आँखों से देखते रहें? अथवा उसकी रक्षा के लिये अपने कर्तव्य का पालन करें? प्यारे बन्धुओ! देश की इस संकट की घड़ी में अब आप उठें और अपने कर्तव्य को निश्चित करें। धर्म पर बलिदान होने वाले गुरु गोविन्द, गुरु तेग बहादुर, वीर बन्दा वैरागी, वीर हकीकत,

पं० लेख राम तथा स्वामी श्रद्धानन्द की आत्मायें आप की ओर निहार रही हैं।उन्होंने अपनी बलि चढ़ा कर अपने हृदय के रक्त से इस वैदिक धर्म को सींचा है। उनकी हम सन्तानों के रहते क्या उन महान् आत्माओं का बलिदान व्यर्थ जायगा ? क्या हमारे देखते-देखते हिन्दू धर्म आँखों से ओझल हो जायगा ? नहीं, कदापि नहीं। आप उठिये और जागिये तथा नीचे लिखे कार्य क्रम के अनुसार धर्म की रक्षा के लिये और शत् शत् बलिदानों के पश्चात् प्राप्त हुई स्वतन्त्रता और अपनी प्यारी राष्ट्रीयता की रक्षा के लिए तैयार हो जाइये। विश्वास रखिये यदि आप में जरा भी सावधानी आयी और आपने देश और धर्म के लिये कुछ भी अपने कर्तव्य का पालन किया तो सफलता आपके साथ रहेगी। उलूक और चमगादड़ तभी तक विचरण करते हैं जब तक अन्धकार रहता है। प्रकाश के आते ही उन्हें खोखलों में मुँह छिपाना ही पड़ता है। अतः अब आप जागें। १–आप अपने गाँव में किसी भी ईसाई को आया हुआ देख कर सावधान हो जाँय। वाणी मात्र से भी उसका सत्कार न करें। जल्दी से जल्दी उसे गाँव से बाहर करने की चेष्टा करें। २–आप अपने बच्चों को किसी भी ईसाई संस्था में पढ़ने के लिये न भेजें। जो बच्चे उनके स्कूलों में पढ़ रहे हों उनको अविलम्ब उन स्कूलों से हटा लें। ३–आप किसी भी ईसाई अस्पताल में औषधि लेने की चेष्टा न करें। विश्वास रखें, ये ईसाई डाक्टर अपनी औषधियों में कुछ ऐसी वस्तुओं का मिश्रण करके ही देते हैं जिससे आपको धार्मिक आघात पहुँचे। ४–आप अपने अछूत कहे जाने वाले व्यक्तियों के साथ सहृदयता का बर्ताव करें। स्मरण रखें, भगवान् की सृष्टि में मानव मानव को अछूत समझे, इससे बढ़ कर और कौन-सा पाप होगा ? गाय-गाय को अछूत नहीं समझती। बैल बैल को अछूत नहीं समझता। घोड़ा घोड़ा को अछूत नहीं समझता। क्यों ? इसीलिय कि वह एक जाति है। मानव भी एक जाति विशेष है तब मानव मानव ही को अछूत समझे, यह कितने आश्चर्य की बात है ? हमारी इसी करनी के फल से पाकिस्तान बना और यदि यही रूप बना रहा तो पता नहीं कितने और

स्तान बन जाँय। अतः आप अपने ही अंगों को अछूत न समझें। ५—आप गाँव-गाँव में नव जवानों की टोली बना कर अपनी रक्षा पंक्ति तैयार करें। अपने गाँव के पिछड़े तथा निर्धन जनों पर दृष्टि रखें और उनके परिवारों तथा परिवार के सदस्यों की गणना कर के उनकी संख्या से परिचित रहें। जहाँ एक भी कमी दिखाई पड़े उसकी पूछ ताछ कर के अपनी शंका का निवारण कर लिया करें और एक भी अवांछित तत्व को उनके समाज में आया हुआ पायें तो उसे उनके पास से हटा कर ही दम लें। ६—प्यारे हरिजन बन्धुओ! आप की रक्षा के लिये महात्मा गान्धी ने अपने जीवन की बाजी लगा दी थी। ऋषि दयानन्द तथा उनके द्वारा संस्थापित आर्य समाज ने तो आपके उत्थान के लिये सब कुछ किया और आज भी कर रहा है। अतः आप अपने को सँभालें, चेतें और सावधान हो जाँय। ये ईसाई मिशनरी आप की अशिक्षा और निर्धनता का अनुचित लाभ उठाते और आप को बहका कर अपना उल्लू सीधा करते हैं। आप उनके बहकावे में न आकर अपने प्यारे धर्म और देश की रक्षा में लग जाँय। आप उन्हें स्पष्ट बतला दें कि हम इतने जाग चुके हैं कि हमारा बहकाया जाना सम्भव नहीं। आप ऊँची-नीची जाति की कल्पना की प्रतिक्रिया में अपने को स्वाहा न करें। आप को सर्वत्र समान अधिकार प्राप्त है। आप अपने को हीन न समझें। वेद, वैदिक धर्म तथा भगवद् भक्ति में आप को उतना ही अधिकार प्राप्त है जितना हमको। अतः उसकी रक्षा के लिए भी आपका उतना ही कर्तव्य है जितना हमारा। इसलिये ईसाइयों के चंगुल से बचें और आप अपनी बस्ती में उन्हें किसी भी प्रकार का आश्रय प्रदान न करें। वे आपके, आपके धर्म के तथा आपके देश के शत्रु हैं। उनके क्रिया कलापों में आप का किसी प्रकार का सहयोग न हो। ७—आप आर्य समाज द्वारा दिये हुये साहित्य का अध्ययन करें और उसे अधिक से अधिक हाथों में पहुँचाने की चेष्टा करें। ८—जहां कोई ईसाई प्रचारक बात करना चाहे, आप अपने पढ़े साहित्य के आधार पर उससे बात करें और यदि आवश्यक समझें तो तुरन्त आर्य समाज को सूचना दें। विश्वास रखें, जैसे प्रकाश के आते ही अन्धकार का पता नहीं चलता उसी प्रकार आर्यसमाज के सेवकों

को देखते ही ये बेचारे पादरी सदा के लिये पलायन कर जाँयगे। ९–आप अपने क्षेत्र के सभी प्रमुख स्थानों (ममस्थलों) पर आर्य समाज की स्थापना करें जिससे आपका सम्बन्ध केन्द्रीय आर्य समाज से बना रहे और आवश्यकता पड़ने पर बड़ी से बड़ी सहायता आपको मिल सके। १०–आप यह कदापि न भूलें कि एक ओर आप हैं और दूसरी ओर सम्पूर्ण ईसाई जगत। जहाँ से अपार धन राशि भारत में ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिये पानी की तरह उमड़ती हुई चली आ रही है। अतः उनका सामना करने के लिये धन की भी आवश्यकता है। इसलिये आप अपनी गाढ़ी कमाई में से प्रति मास इस कार्य के लिये निष्ठा पूर्वक कुछ निकालते जाँय और समय पड़ने पर उदारता पूर्वक उसका दान करें। ऐसा करने से आर्य समाज के सेवकों का भार हल्का हो जायगा और वे दूने उत्साह से आये हुए संकट का सामना करके उसे टालने में समर्थ होंगे।

सरकार का कर्त्तव्य

हम अपने कर्त्तव्य के साथ साथ सरकार से भी उसके कर्त्तव्य पालन के लिये निवेदन किये बिना नहीं रह सकते। सौभाग्य से आज हमारी सरकार है। भारत सरकार का कर्त्तव्य है कि वह भारतीय धर्म और भारतीय संस्कृति की रक्षा तथा उसके प्रसार का दायित्व निर्वाह करें। पर खेद है कि सरकार धर्म निरपेक्षता की आड़ में अपनी निष्क्रियता को छिपा कर अधर्म के विस्तार का अवसर दे रही है। धर्म निरपेक्षता का अर्थ धर्म-हीनता तो कदापि नहीं है। आज धर्म के नाम पर जो अनेक धर्माभास चल पड़े हैं, सरकार उनके पचड़े में न फँसे, यह उचित ही है। पर जो साश्वत सत्य है उसका प्रचार और प्रसार करना तो उसका कर्त्तव्य ही है। वेद जाति विशेष अथवा सम्प्रदाय विशेष के ग्रन्थ नहीं हैं। उनका उदय मानव मात्र के लिये हुआ है। अतः वेद और उसकी शिक्षायें मानव मात्र के लिये उपयोगी हैं। उसके सार्व तान्त्रिक, सार्वभौमिक और सर्व हितकारी सिद्धान्तों के संरक्षण और उसके प्रचार-प्रसार से सरकार मुख क्यों मोड़ती है? संसार के सारे धर्म ग्रन्थों में जो सत्य है वह

वेद में विद्यमान है और जो असत्य अथवा दोष है, वेद में उनका चिन्ह भी नहीं मिलता। वेद विश्व का सर्व प्राचीन ग्रन्थ है। शेष अन्य ग्रन्थ बहुत बाद को प्रकाश में आये हैं। गंगा की धारा गंगोत्री से चलकर बगाल की खाड़ी तक पहुँचने में नाना प्रकार के दूषणों से भर जाती है। इसी लिये सागर के निकट का गंगाजल, गगाजल नहीं कहा जा सकता पर क्या गंगोत्री के पवित्र जल की पवित्रता में किसी प्रकार का संन्देह किया जा सकता है ? उसी प्रकार पश्चात के बने तथा कथित धर्म ग्रन्थ सदोष कहे जा सकते हैं। उनके अन्दर सम्प्रदाय विशेष के लिये पक्षपात पाया जा सकता है। पर वेद का स्थान तो इतना ऊँचा है कि वहाँ तक दोष पहुँच ही नहीं सकते। अतः सरकार का परम कर्तव्य है कि अपनी धर्म निरपेक्षता की हठ वादिता त्याग कर वैदिक साश्वत सत्य के प्रचार और प्रसार में तथा उसके संरक्षण में मन लगाये। उसके साथ ही सरकार से निवेदन है कि भारत की स्वतन्त्रता और उसकी राष्ट्रीयता का रक्षा करने के लिये तथा बलात् धर्म परिवर्तन कर भारतीय सीमा के अन्दर पचमांगियों की संख्या बढ़ाने की प्रवृत्ति को रोकने के लिये निम्नलिखित कार्य अविलम्ब करें।

१—अंगरेजी सरकार ने जिन पहाड़ी और जंगली इलाकों को वर्जित क्षेत्र घोषित करके विदेशी मिशनरियों को खुल कर खेलने का अवसर दिया है और आज भी भारत सरकार ने जिस काले कानून को लागू रख कर वैदिक प्रचारकों के मार्ग का अवरोध कर रखा है उस कानून को अविलम्ब निरस्त (रद्द) करके प्रत्येक भारतीय को स्वतन्त्रता पूर्वक उन बनों और पहाड़ों में जाने और काम करने का अवसर दे। २—भारत में धर्म प्रचार कर रही प्रत्येक विदेशी संस्था से अनुमति पत्र वापस लेकर उनका कार्य समाप्त करे और उसे आदेश दे कि वह अपनी सम्पत्ति सीमित समय के अन्दर बेच कर स्वदेश लौट जाय। ३—भारत में रह रहे सभी विदेशी मिशनरियों को शीघ्र भारत से निकाल दिया जाय। उनका जीवन भारत के लिए अवांछित समझा जाय। ४—ईसाई

मिशन के लिये बाहर से आने वाले सभी अर्थ-साधनों पर सरकार नियन्त्रण रखे और उसके आय-व्यय का सम्यक परीक्षण करती रहे। ५—जिन विदेशी ईसाइयों को भारतीय नागरिकता प्राप्त हो उनकी गति विधियों की भली भांति देख रेख की जाय और संदिग्धावस्था में उनको नागरिकता से वंचित किया जाय। ६—हरिजनों, बन वासियों एवं पिछड़े वर्गों के धर्म परिवर्तन पर तब तक के लिय प्रतिबन्ध लगा दिया जाय जब तक वे आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से अन्य वर्गों के समान स्तर पर न आ जायँ। ७—हरिजनों की भाँति वनवासियों और आदि-वासियों पर भी यह नियम लागू कर दिया जाय कि जो अपना धर्म परिवर्तन कर लेगा वह पूर्ववत् सरकार द्वारा दी जाने वाला सुविधाओं को प्राप्त न कर सकेगा। ८—ईसाई स्कूलों में जो गैर ईसाई बच्चे शिक्षा पा रहे हों उन्हें बिना उनके माता-पिता की आज्ञा प्राप्त किये ईसाई धर्म की शिक्षा देने पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाय। ९—सरकार नियोगी समिति के रिपोर्ट की सभी सिफारिशों को स्वीकार कर उसे कार्यान्वित करे। १०—उड़ीसा सरकार की भाँति सभी प्रान्तीय सरकारें अराष्ट्रीय ईसाई निरोध सम्बन्धी कानून बनाकर अपने-अपने क्षेत्रों में अपने कर्त्तव्य का पालन करें।

ईसाई धर्म के सम्बन्ध में महापुरुषों की सम्मतियां

जिस ईसाई धर्म के सम्बन्ध में ऊपर इतनी बातें लिखी गईं, जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि सम्प्रति वह विश्व धर्म बन रहा है और जिसके प्रचार और प्रसार के लिये ईसाई मिशनरी अरबों रुपया व्यय करके अपनी एड़ी चोटी का पसीना एक कर रहे हैं; वह ईसाई धर्म विश्व के महापुरुषों की दृष्टि में कैसा है? संसार के महापुरुष उसे क्या समझते हैं और स्वयं ईसाई समझदार सज्जन उसको कैसा रूप देते हैं? इस स्थल पर यही बतलाना आवश्यक समझता हूँ। सर्व प्रथम "सर्व धर्म समभाव" समझने वाले विश्ववन्द्य महात्मा गान्धी के विचारों को देखिये।

१—"ईसाइयत कल का मत है। इसकी रूप-रेखा ठीक-ठीक हमारे सामने नहीं आई। बाइबिल का यह कथन कि केवल ईसा ईश्वर-पुत्र थे,

सत्यता से दूर है। ईसा को पूर्ण कहना ईश्वर की पूर्णता पर शक करना है। ईसा का मुर्दे खड़े करना भी ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है। ईसा पर विश्वास करना ईश्वर की प्राप्ति का साधन नहीं।"

"मेरी कठिनाइयों का जड़ बहुत गहरे में थी। एकमात्र ईसा मसीह ही ईश्वर के पुत्र है, जो उन्हें मानता है वही मुक्ति का अधिकारी हो सकता है; यह बात मेरा मन किसी भी तरह स्वीकार करने को तैयार नहीं होता था। यदि ईश्वर का पुत्र होना सम्भव है तो हम सभी उसके पुत्र हैं। ईसा मसीह ने अपना जान देकर अपने खून से संसार के सब पापों को धो डाला है; इस बात को अक्षरशः सच मानने को मेरी बुद्धि कबूल नहीं करती। इसके अलावा ईसाई लोगों का विचार है कि आत्मा केवल मनुष्यों में ही है, अन्य जीवों में नहीं है एवं शरीर के विनाश के साथ ही उसका सब कुछ विनष्ट हो जाता है, इस बात से मेरा मन सहमत नहीं है। ईसामसीह को मैं एक त्यागी, महापुरुष और धर्म गुरु के रूप में मान सकता हूँ। यह भी मैं स्वीकार करता हूँ कि ईसा की मृत्यु संसार में बलिदान का एक महान् दृष्टान्त छोड़ गई है। पर मेरा हृदय यह स्वीकार नहीं कर सका है कि उनकी मृत्यु ने संसार में कोई अभूत पूर्व या रहस्य पूर्ण प्रभाव डाल रखा है। ईसाई लोगों के पवित्र जीवन में मुझे कुछ ऐसा नहीं मिलता है जो अन्य धर्मावलम्बियों के जीवन में नहीं मिलता। सात्विक दृष्टि से भी ईसाई धर्म के तत्वों में कोई ऐसी असाधरणता नहीं है और त्याग की दृष्टि से देखने पर तो हिन्दू धर्म ही श्रेष्ठ प्रतीत होता है। मैं ईसाई धर्म को पूर्ण अथवा सर्व श्रेष्ठ धर्म मानने को तैयार नहीं हूँ। जब प्रसंग आ उपस्थित होता है तो मैं अपने ईसाई मित्रों के आगे धर्म सम्बन्धी हृदयोद्गार व्यक्त कर दिया करता हूँ पर मुझे उसका सन्तोषजनक उत्तर उनसे नहीं मिलता।" आत्म कथा पृष्ट २०६-२०७।

ईसाई महिला एमली से एक प्रकार का शास्त्रार्थ सा करते हुए महात्मा गान्धी ने कहा—"आपके विचार में ईसामसीह ईश्वर का इकलौता बेटा था पर मेरे विचार में वह ईश्वर का एक पुत्र था। चाहे हमारी

अपेक्षा वह कितना ही अधिक पवित्र क्यों न हो, किन्तु हम में से प्रत्येक ईश्वर का पुत्र है और वह कार्य कर सकता है जो ईसा ने किया"। (क्रिश्चियन मिशन इन इंडिया से)

ईसाइयत के अतिरिक्त विदेशी मिशन के सम्बन्ध में विश्ववन्द्य गान्धी जी ने अपना विचार प्रकट करते हुए लिखा है—"विदेशी मिशन के सम्बन्ध में और कुछ न कह कर इतना ही कहना उचित समझता हूँ कि वे कभी भारत की सेवा नहीं कर सकते और न सेवा के भाव से वे यहाँ आये ही हैं। वे तो कालेजों और अस्पतालों में ईसाइयत का प्रचार चाहते हैं इस वास्ते जितनी जल्दी भारत छोड़ें अच्छा है। मेरे राष्ट्र और उसका सनातन संस्कृति को किसी दूसरे मानव के बनाये मत की कत्तई जरूरत नहीं।"

२—रूस के प्रसिद्ध विचारक ऋषि तुल्य महात्मा टालस्टाय ने भी "ह्वाट इज रिलीजन" नामक ग्रन्थ के पृष्ट १८ में ईसाइयत की आलोचना करते हुए लिखा है—"वास्तव में किसी मत ने इतनी स्पष्ट वर्तमान ज्ञान-विज्ञान-विरुद्ध और अनैतिकता पूर्ण बातों का प्रचार नहीं किया जितना गिरजा घरों में प्रचारित ईसाइयत ने"।

३—आक्स फोर्ड युनिवर्सिटी इंगलैंड के डी० यस० सी० तथा प्राणि-शास्त्र के विशेषज्ञ डा० एलविन स्वयं फादर एलविन बनकर भारत में ईसाई धर्म का प्रचार करने आये थे। परन्तु ईसाई पादरियों के छल-कपट और उनके नित्य के पापाचरण से ऊब कर न केवल अपने कार्य से अलग हो गये अपितु एक सच्चे विचारक के रूप में आपने ईसाइयों के कार्यों की तीव्र आलोचना की है। उन्होंने मध्य प्रदेश के अन्दर आदि वासियों के साथ किये जाने वाले क्रूर तथा अमानुषिक व्यवहारों और मिशनरियों की काली करतूतों का भंडा फोड़ किया, जिसे सुन कर सारा देश भौचक्का रह गया। इन्हीं के द्वारा रहस्योद्घाटन होने पर उसकी जाँच के लिए सरकार को नियोगी समिति' बनाने के लिये विवश होना पड़ा। उन्होंने कहा—"इन प्रदेशों में सरकारी अफसरों के करने के बहुत से कार्य खुद मिशनरी ही करते हैं। अदालतों के काम में तथा स्थानीय अधिकारियों के

काम-काज में वे हस्तक्षेप करते हैं और वहाँ के गोंडों (जंगली जाति) पर यह प्रभाव डालते हैं कि वास्तविक सरकार वे ही हैं। मूल निवासियों में यह आतंक व्यापक रूप से छाया हुआ है और यह बिलकुल ठीक है कि मिशनरी लोग उनको पीटेंगे या फादर लोग उनके घरों में घुस कर उनकी स्त्रियों को घसीटेंगे।" आप पुनः कहते हैं—"मिशनरी लोग भोले-भाले गोंडों के अंगूठों के निशान ले लिया करते हैं और बाद में धमकाते हैं कि ईसाइयों के धर्म का समर्थन न करने पर उनपर फौजदारी का मुकदमा चलाया जायगा।"

४—अमेरिका के इंगर सोल नामक एक विचारक ने अपनी "धर्म के नाम पर" नामक पुस्तक में ईसाइयत के सम्बन्ध में लिखा है—"बाइबिल अनर्गल, सन्दिग्ध एवं असम्बद्ध प्रलापों से भरी पड़ी है। मैं बाइबिल और बाइबिल के मत ईसाइयत को नष्ट करने के लिये आजीवन यत्न करूँगा और आशा करता हूँ, मेरे जैसे अन्य जन भी इसको यथा सम्भव शीघ्र समूल नष्ट करेंगे तभी संसार में सच्ची शान्ति स्थापित हो सकेगी।" पाठकों को यह नहीं भूलना चाहिये कि श्री इंगर सोल स्वयं ईसाई सन्तान हैं और उसी अमरीका के नागरिक हैं जहाँ से उक्त थोथी ईसाइयत के प्रचार के लिये अरबों रुपया पानी की तरह बहाया जाता है। पर संसार में ऐसे सच्चे मानवों की कमी नहीं है जो ईसाइयों के पापाचरण तथा उनकी मक्कारियों को देख कर ऊब न जाँय। श्री इंगर सोल उन्हीं में से एक हैं।

५—कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले 'हेरल्ड' नामक पत्र ने अपने २८ अगस्त सन् ६७ के अंक में श्री कानन जे० एस० वेजेंट नामक एक विशिष्ट ईसाई विद्वान के विचारों को प्रकाशित किया है श्री वेजेंट ने अपने उक्त विचारों को आक्स फर्ड में होने वाले महान् ईसाई सम्मेलन में व्यक्त किया था। आपके विचार निम्नलिखित हैं—"नरक की आग और मृत्यु के बाद की नरक की यातनाओं सम्बन्धी पुराने (बाइबिल के) विचारों के सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि यह विकार ग्रस्त मस्तिष्कों की उपज है।" पुनः अपने भाषण के क्रम में आप कहते हैं कि "स्वर्ग सम्बन्धी परम्प-

रागत, तर्क शून्य कल्पना सर्वथा अवांछनीय है। मध्य कालीन कैथोलिक तथा सुधार वादी प्रोटेस्टेंटों की अपनी अपनी मान्यताओं के आधार पर मरणोपरान्त की परिस्थिति के सम्बन्ध में स्वतन्त्र विचारों की एक उड़ान मात्र है" पुनः आप सच्चाई के साथ कहते हैं—"यह स्पष्ट रूप से स्वीकार करने में कोई दोष नहीं है कि हम ईसाई, जीवन तथा मृत्यु के सम्बन्ध में पत्ते पर उड़ने वाले कीड़े के बच्चे के उड़ने सम्बन्धी ज्ञान से अधिक कुछ नहीं जानते।" इस प्रकार आक्स फोर्ड के ईसाई सम्मेलन में श्री कानन जे० यस० बेजेंट ने अपने विचारों को व्यक्त कर स्पष्ट कर दिया कि ईसाइयत के अन्दर स्वतन्त्र विचारक के लिए कुछ भी सामग्री नहीं है।

६—श्री थामस पेन १७३९ ई० में इंगलैंड में पैदा हुए थे। आप एक धार्मिक और राजनीतिक महान् नेता थे। आपने अमरीका और फ्रांस की राजक्रांतियों में सक्रिय भाग लिया था। आप ने "एज आफ रीजन" नामक ग्रन्थ लिखा, जिसे कैथलिक चर्च के महापुरोहित ने आवांछित बतला कर जब्त कर लिया। उस ग्रन्थ रत्न में से श्री थामस पेन महोदय के ईसाइयत सम्बन्धी कुछ विचार नीचे लिखे जाते हैं—"ईसा के मर कर जी उठने और सदेह स्वर्ग सिधारने की कहानी तो उसकी जन्म सम्बन्धी अद्भुत कल्पना की प्रति मूर्ति मात्र है।..... संत थामस (ईसा के १२ शिष्यों में से एक) को ईसा के मर कर जीने में कोई बिश्वास न था और न मुझको ही इसमें कुछ विश्वास है"। पुनः मिस्टर पेन कहते हैं—"जब हम उस प्रभु की महती व्यापकता के सम्बन्ध में विचार करते हैं जो इस अनन्त ब्रह्माण्ड को रचकर धारण किये हुए हैं और भारी प्रयत्नों के उपरान्त भी हम इस ब्रह्माण्ड का केवल अंश मात्र ही इन चर्म चक्षुओं द्वारा ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं तो हमको बाइबिल की इन तुच्छ गाथाओं को ईश्वरीय ज्ञान कहते हुए लज्जा आनी चाहिये।" पृष्ठ ७। पुनः लेखक बाइबिल की सामान्यता का उल्लेख करता हुआ लिखता है—"जब हम उन घृणित गाथाओं, उत्तेजना दायक भ्रष्ट आचरणों, क्रूर और यातना पूर्ण संहारों एवं निर्दयता पूर्ण बदला लेने की भावनाओं को, आधा से अधिक बाइबिल

जिनसे भरी हुई है, पढ़ते हैं तो बाइबिल को ईश्वरीय ज्ञान कहने के स्थान पर शैतान का ज्ञान ही कहना अधिक उपयुक्त होगा।" पृष्ट ७। आगे अपना विषय बढ़ाता हुआ लेखक पुनः लिखता है—"जब मैं देखता हूँ कि इस बाइबिल के अधिकतर भाग में भयंकर दुश्चरितों, एवं तुच्छ और घृणित कथाओं के वर्णन के अतिरिक्त अन्य कुछ धरा ही नहीं है तो मैं इसको ईश्वरीय ज्ञान कह कर अपने उस महान् सृजन हार का अपमान नहीं कर सकता।" पृष्ट ९-१०। बाइबिल पाप को क्षमा कराती है परन्तु प्रबुद्ध विचारक थामस पेन कहता है—"यह भावना, जो भले ही सम्प्रति लुप्त प्राय हो गई है कि पादरी लोग पापों को क्षमा करा सकते हैं, समाज के लिए निरन्तर हानिकारक सिद्ध हुई है और साथ ही यह उस सर्व शक्तिमान प्रभु का अपमान करने वाली है। निश्चय ही इस भावना ने मानवता के आन्तरिक विकास को कुंठित कर दिया है और मानव को प्रत्येक प्रकार के पापों के करने की प्रेरणा दी है"। पृष्ट ३३। अन्त में बाइबिल की सच्चाई पर अविश्वास प्रगट करते हुए लेखक लिखता है—"इस लिये यदि हम ऐसा बश्वास करते हैं कि बाइबिल एक सत्य ग्रन्थ है तो हमें उस परमात्मा की महती न्याय व्यवस्था के प्रति, जिसमें हमारी आस्था है, उसको मन से दूर भगाना होगा"। पृष्ट ३६।

७-विश्व के महान् दार्शनिक श्री बरट्रेंड रसेल ने अपनी "ह्वाई आई ऐम नाट ए क्रिश्चयन"? नामक ग्रन्थ में लिखा है—"तथा कथित धार्मिक युग में जब लोग वस्तुतः पूर्णतया ईसाई धर्म में विश्वास रखते थे, अत्याचार से पूर्ण इनक्विजिसन जारी था। जिसके फल स्वरूप लाखों की सख्या में अभागिनी स्त्रियाँ डायन के रूप में जीवित जला दी गईं और धर्म के नाम पर सभी प्रकार के लोगों पर हर प्रकार की निष्ठुरता बरती गई।" आगे आप पुनः लिखते हैं "मैं मुक्त कंठ से यह कहता हूँ कि ईसाई धर्म जैसा वह चर्चों (गिरिजा घरों) में व्यवस्थित है; विश्व की नैतिक प्रगति का मुख्य शत्रु रहा है और अब भी है।"

प्यारे पाठको! हमने विश्व वन्द्य महात्मा गान्धी, ऋषि तुल्य महात्मा टालस्टाय डा० एलबिन डी० बस० सी०, श्री इंगर सोल, कानन जे० यम०

मैंने श्री थामस पेन तथा श्री बरट्रेंड रसेल के ईसाइयत सम्बन्धी विचारों से आपको अवगत कराया। महात्मा गान्धी के अतिरिक्त शेष ६ सज्जन स्वयं ईसाई महापुरुष हैं किन्तु उन्होंने बाइबिल तथा ईसाइयत की निस्सारता तथा उसके खोखलपन को कितनी निर्भीकता और सच्चाई के साथ व्यक्त किया है। अब घर-घर द्वार पर घूमने वाले और भोली-भाली जनता को ठगने तथा भुलावा देने वाले ये पादरी बतलावें कि जब ईसाइयों को ही ईसाइयत और बाइबिल में विश्वास नहीं है तब वे हमें उस पर विश्वास लाने तथा उसके अनुसार जीवन बनाने के लिये उपदेश क्यों देते हैं ? आप इन विचारों को पढ़ें और पादरियों के समक्ष स्वयं निर्भीकता से खड़े होकर उनके खोखलापन को प्रकट कर उन्हें अपने गाँव से दूर भगावें। भगवान आप की तथा आपके राष्ट्र की रक्षा करें।

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पुस्तक परिग्रहण क्रमांक 5250
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

२४२०